या गौस-ए-आजम | या ख्वाजा -ए-आजम | या जिन्दाशाह मदार-ए-आजम

हदिया 12/- रुपये ख्वाजा गरीब नवाज शिफा खाना

RNI No. MPHIN/2011/39179

वर्ष : 4 अंक : 03 मासिक मार्च 2014

- हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की पैदाईश
- मंलगाने किराम के बाल शरीअत के आईन में
- बारगाहे नुबूवत से हिजर व जुदाई का एहसास
- अंसार महाजिर भाई- भाई
- हज़रत कुतबुल मदार का रोजा
- बैअत व मुरीदी का शरई जायजा

ख्वाजा गरीब नवाज शिफाखाना

खलीफए हुजुर मुफ्तिए आज़म हिन्द
हज़रत नूरी बाबा

हाफिज शाहिद मासूमी मदारी, पनिहार

मौलाना शाकिर रज़ा नूरी

سلسلۂ مداریہ کے بزرگوں کی سیرت و سوانح
سلسلۂ عالیہ مداریہ سے متعلق کتابیں
سلسلۂ مداریہ کے علماء کے مضامین تحریرات
سلسلۂ مداریہ کے شعراء اکرام کے کلام

حاصل کرنے کے لئے اس ویب سائیٹ پر جایئے

www.MadaariMedia.com

Authority : Ghulam Farid Haidari Madaari

बेदारी ज़ेहनों में रखिये रोशन राहे उक़बा है।
आपकी ख़िदमत में हाज़िर यह शम-ए-रिसालत तोहफा है।।

शम-ए-रिसालत

◎ ईसाले सबाव ◎

मरहूम हसन खां साहब, मरहूम सरदार बेगम, मरहूम नन्ने खाँ वकील, मरहूमा साजिदा बेगम
मरहूम अज़ीज़ अख़्तर, मरहूमा शबनम अख़्तर, मरहूमा रूमा

वर्ष-4 अंक -3 मार्च 2014 रबीउल अव्वल मदार का चांद

आइना-ए-शम-ए-रिसालत

मज़मून निगार की राय से इदारे का इत्तिफाक ज़रूरी नहीं।

कानूनी विवाद के लिये न्याय क्षेत्र ग्वालियर होगा।

फी शुमारा-12 सालाना-140 लाईफ मेम्बरशिप-5000

नोट- किसी भी किस्म की क़ानूनी कार्यवाही सिर्फ ग्वालियर कोर्ट में क़ाबिले समाअत होगी-इदारा

खत व किताबत का पता

शम-ए-रिसालत (माहनामा)
माधौगंज, उटारखाना, लश्कर-ग्वालियर -474 001 (म.प्र.)
मोबा. 9770343329
खाता नम्बर-1616609982 सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया ग्वालियर

स्वात्वाधिकारी एवं प्रकाशक खालिद अख्तर के लिये मुद्रक शफीक खान द्वारा अपैक्स कम्प्यूटर एण्ड ऑफसेट प्रिन्टर्स, रॉयल हॉस्पीटल के सामने, रॉक्सी सिनेमा के पास, लश्कर ग्वालियर से मुद्रित तथा माधौगंज, उटारखाना, फर्श वाली गली, लश्कर, ग्वालियर से प्रकाशित।
संपादक- खालिद अख्तर RNI No. MPHIN/2011/39179
e-mail : khalidakhtargwl@gmail.com

इदारिया

ईमान की ताक़त

ईमान कभी मजबूर नहीं होता वह अपने असर व दख़ल के लिए खुद राहें पैदा कर लेता है, इसकी शहादत मशहूर सय्याह ''इब्ने बतूता'' के सफ़रनामे के एक वाक़ेए से हो सकती है। जब इब्ने बतूता सैर व सियाहत करते जावा गए तो आपको वहां यह देख कर तअज्जुब हुआ कि पूरी आबादी मुसलमान है। आपने इसकी वजह दर्याफ़्त की तो बड़े बूढ़ों ने यह वाक़ेआ सुनाया :

एक दफ़ा अरबों का तिजारती जहाज़ समंदर से गुज़र रहा था कि जबरदस्त तूफ़ान समंदर में उमड आया, जहाज किसी चट्टान से टकरा कर पाश पाश हो गया और मुसाफ़िर डूब गए लेकिन एक मुसलमान अरब के हाथ जहाज़ का एक तख़्ता लग गया जिसकी मदद से वह उस साहिल पर उतर गए और वहीं एक बुढ़िया की झोंपड़ी में रहने लगे, उस बुढ़िया की एक इक्लौती बेटी थी, यह अरब रोजड जंगल से लकड़ियां काट कर लाते और फ़रोख़्त करते, इस तरह यह तीनों अपनी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे। एक दिन वह जंगल से वापस आए तो उन्होंने देखा कि उनकी मोहसिन बुढ़िया ज़ार व क़तार रो रही है, उन्होंने वजह पूछी, बुढ़िया ने जवाब दिया : ''हमारे मुल्क में हर साल एक बला समंदर की जानिब से आती है जब तक किसी दोशीज़ा को मंदिर में जो समंदर के किनारे बना हुआ है उसके हवाले न किया जाए वह टलती नहीं, हर साल कुरआ में ज़रिए फ़ैसला होता है कि किसको भेजा जाए उसके बाद लड़की को मंदिर में सरे शाम भेज देते हैं और सुब्ह वह लड़की मुर्दा पाई जाती है। इस दफ़ा मेरी इक्लौती लड़की का नाम कुरआ में निकला है यह कह कर वह बेहद रोई। बुढ़िया के अरब मेहमान से यह कैसे हो सकता था कि वह उनकी मदद न करते। उस अरब नौजवान ने सोचा यह समंदरी बला क्या चीज़ है? नफ़ा व नुक़सान का मालिक तो अल्लाह है, हो न हो यह यहां के मज़हबी लोगों का कोई गोरख धंदा है अब वह अरब उठे और उन्होंने कहा, ''माई तुम्हें रोने की ज़रूरत नहीं, मैं तुम्हारी लड़की की बजाए मंदिर में जाऊंगा तुम्हें मुझ पर एहसान किया है इसलिए मैं अल्लाह का नाम लेकर कोशिश करूंगा कि तुम्हारी लड़की को इस मुसीबत से नज़ात दिलाऊं''।

चुनांचे यह नौजवान लड़की का लिबास पहन कर मंदिर जाने के लिए तय्यार हो गए जब हुकूमत के सिपाही लड़की को लेने आए तो वह उनके साथ हो लिए, शाम होते ही लोग उन्हें उस मंदिर में अकेला छोड़ आए जहां यह जाहिल लोग हर साल एक कुंवारी लड़की की कुरबानी करते।

उस अरब बहादुर ने जो अल्लाह के सिवा किसी से डरना जानता ही नहीं था वुज़ू किया और मग़रिब की नमाज़ अदा की और फिर रात भर इबादत में मसरूफ़ रहने की नीयत से इबादत शुरू कर दी यह हाफ़िज़े कुरआन थे, उन्होंने बलंद आवाज़ में अल्लाह का कलाम नमाज़ में पढ़ना शुरू कर दिया। रात गए उन्हें कुछ आहट महसूस हुई लेकिन यह बदस्तूर तिलावत में मसरूफ़ रहे कुछ देर बाद जब उन्होंने सलाम फेरा और इधर उधर देखा तो कुछ न था, समंदर का किनारा था, पुर फ़ज़ा मक़ाम पर फिर नमाज़ में मसरूफ़ हो गए और इस तरह उस बला के मनतज़िर थे जो कुंवारी लड़की की कुरबानी करने हर साल आती थी, और सुब्ह को मुर्दा लाश मिलती। इसी इंतिज़ार में रात भर नमाज़ और तिलावत में मसरूफ़ रहे मगर कोई बला न आई, जब सुब्ह हो गई तो वह इस नतीजे पर पहुंचे कि शायद उस क़ौम के पेशवाओं ने अपनी कौम को बेवक़ूफ़ बनाने और अपनी नापाक ख़्वाहिशात को पूरा करने के लिए यह सारा ढंग रचा रखा था लेकिन जब रात को वह आए और उन्होंने अल्लाह के इस सिपाही को तिलावत और नमाज़ में मसरूफ़ पाया तो उनके मुजरिम दिलों को इतनी जुरअत न हुई कि वह नौजवान से कुछ बोलते। मुम्किन है कि उन्हें अपना भांडा फूट जाने का भी डर हो इस लिए वह चुपके से ही उलटे पांव वापस लौट गए। जब सुब्ह को हस्बे दस्तूर सिपाही लड़की की मुर्दा लाश को लेने आए तो उन्हें यह देखकर हैरता हुई कि लड़की सही सलामत है चुनांचे वह अपने बादशाह के पास ले गए बादशाह ने तरह तरह के सवाल किए बिलआख़िर उनको हक़ीक़त वाज़ेह करना पड़ी, चुनांचे आपने फ़रमाया ''उस बुढ़िया ने मुझ पर एहसान किया था और मैं मजबूर था कि उसके एहसान का बदला दूं'' बादशाह ने कहा, ''क्या तुम ऐसी ख़तरनाक जगह जाते हुए डरे नहीं''? उन्होंने कहा ''मैं अपने मज़हब की तालीम के बमूजिब सिवाय वहदहूलाशरीक के किसी से नहीं डरता, नफ़ा व नुक़सान उसी के हाथ में है उसके हुक्म के बग़ैर मौत नहीं आ सकती और यह सब कुछ आपके मज़हबी पेशवाओं की शरारत मालूम होती है, उन्होंने ही हमारे लोगों को बेवक़ूफ़ बना रखा है''।

अरब की इस बात ने सारे दरबार को हैरत में डाल दिया, बादशाह ने मुतअस्सिराना लहजे में कहा : ''अगर तुम इसी तरह अगले साल भी जा कर सही सलामत आ जाओ तो मैं अहद करता हूं कि अपने ख़ानदान और रिआया समेत अल्लाह पर ईमान ले आऊंगा जिसको तुम मानते हो''

दूसरे साल भी उसी तारीख़ पर वह मुसलमान अरब दोबारा मंदिर में जा कर बफ़ज़्ले खुदा सही सलामत वापस लौटे। बादशाह वादे के मुताबिक़ बमअ् ख़ानदान व रिआया ईमान ले आया।

सच है इस्लाम को दुनिया ने ऐसे ही लोगों की बदौलत पहचाना है जो ईमान और अल्लाह पर भरोसा की वजह से दूसरे इंसानों के मुक़ावले में बहुत ऊंचा दर्जा रखते हैं।

खालिद अख्तर (एडवोकेट)
E-mail : khalidAkhtargwl@gmail.com

जो घमण्ड करता है अल्लाह उसे जलील कर देता है।

दरसे क़ुरआन

क़ुरआन शरीफ़ ख़ुदा का कलाम है और पूरी इंसानियत के लिए हिदायत है और इसमें हर चीज़ का इल्म मौजूद है। हम यहाँ अलक़ुरआन कॉलम के तहत क़ुरआने अज़ीम का हिन्दी में तर्जमा और उसकी तफ़सीर सिलसिलावार अपने क़ारेईन की ख़िदमत में पेश करेंगे। सभी कारेईन से गुज़ारिश है कि इस कॉलम को बहुत गौरो फ़िक्र से पढ़ें..... *इदारा*

चौथा रूकू सूरए-निसा-पारा लन-तनालु

सूरए निसा – तीसरा रूकू

(1) यानी मुसलमानों में के.

(2) कि दो बदकारी न करने पाएं.

(3) यानी हद निश्चित करे या तौबह और निकाह की तौफ़ीक़ दे. जो मुफ़स्सिर इस आयत "अलफ़ाहिशता" (बदक़ारी) से ज़िना मुराद लेते हैं वो कहते हैं कि हब्स का हुक्म हूदूद यानी सज़ाएं नाज़िल होने से पहले था. सज़ाएं उतरने के बाद स्थगित किया गया. (ख़ज़िन, जलालैन व तफ़सीरे अहमदी)

(4) झिड़को, घुड़को, बुरा कहो, शर्म दिलाओ, जूतियाँ मारो. (जलालैन, मदारिक व ख़ज़िन वग़ैरह)

(5) हसन का क़ौल है कि ज़िना की सज़ा पहले ईज़ा यानी यातना मुक़र्रर की गई फिर क़ैद फिर कोड़े मारना या संगसार करना. इब्ने बहर का क़ौल है कि पहली आयत 'o-वल्लती यातीना" (और तुम्हारी औरतों में.....) उन औरतों के बारे में है जो औरतों के साथ बुरा काम करती हैं और दूसरी आयत "वल्लज़ाने" (और तुममें जो मर्द....) लौंडे बाज़ी या इग़लाम करने वालों के बारे में उतरी. और ज़िना करने वाली औरतचें और ज़िना करने वाले मर्द का हुक्म सूरए नूर में बयान फ़रमाया गया. इस तक़दीर पर ये आयतें मन्सूख़ यानी स्थगित हैं और इनमें इमाम अबू हनीफ़ा के लिये ज़ाहिर दलील है उसपर जो वो फ़रमाते हैं कि लिवातत यानी लौंडे बाज़ी में छोटी मोटी सज़ा है, बड़ा धार्मिक दण्ड नहीं.

(6) ज़ुहाक का क़ौल है कि जो तौबह मौत से पहले हो, वह क़रीब है यानी थोड़ी देर वाली है.

(7) और तौबह में देरी कर जाते हैं.

(8) तौबह क़ुबूल किये जाने का वादा जो ऊपर की आयत में गुज़रा वह ऐसे लोगों के लिये नहीं है. अल्लाह मालिक है, जो चाहे करे. उनकी तौबह क़ुबूल करे या न करे. बख़्श दे या अज़ाब फ़रमाए, उस की मर्ज़ी. (तफ़सीरे अहमदी)

(9) इससे मालूम हुआ कि मरते वक़्त काफ़िर की तौबह और उसका ईमान मक़बूल नहीं.

(10) जिहालत के दौर में लोग माल की तरह अपने रिश्तेदारों की बीबियों के भी वारिस बन जाते थे फिर अगर चाहते तो मेहर के बिना उन्हें अपनी बीबी बनाकर रखते या किसी और के साथ शादी कर देते और ख़ुद मेहर ले लेते या उन्हें क़ैद कर रखते कि जो विरासत उन्हों ने पाई है वह देकर रिहाई हासिल करलें या मर जाएं तो ये उनके वारिस हो जाएं. ग़रज़ वो औरतें बिल्कुल उनके हाथ में मजबूर होती थीं और अपनी मर्ज़ी से कुछ भी नहीं कर सकती थीं. इस रस्म को मिटाने के लिये यह आयत उतारी गई.

(11) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया यह उसके सम्बन्ध में है जो अपनी बीबी से नफ़रत रखता हो और इस लिये दुर्व्यवहार करता हो कि औरत परेशान होकर मेहर वापस करदे या छोड़ दे. इसकी अल्लाह तअला ने मनाही फ़रमाई. एक क़ौल यह है कि लोग औरत को तलाक़ देते फिर वापस ले लेते, फिर तलाक़ देते. इस

जब तक आदमी बोलता नहीं उसके राज़ पोशिदा रहते हैं।

तरह उसको लटका कर रखते थे. न वह उनके पास आराम पा सकती, न दूसरी जगह ठिकाना कर सकती. इसको मना फ़रमाया गया. एक क़ौल यह है कि मरने वाले से सरपरस्त को ख़िताब है कि वो उसकी बीबी को न रोकें.

(12) शौहर की नाफ़रमानी या उसकी या उसके घर वालों की यातना, बदज़बानी या हरामकारी ऐसी कोई हालत हो तो ख़ुलअ चाहने में हर्ज नहीं.

(13) खिलाने पहनाने में, बात चीत में और मियाँ बीवी के व्यवहार में.

(14) दुर्व्यवहार या सूरत नापसन्द होने की वजह से, तो सब्र करो और जुदाई मत चाहो.

(15) नेक बेटा वग़ैरह.

(16) यानी एक को तलाक़ देकर दूसरी से निकाह करना.

(7) इस आयत से भारी मेहर मुक़र्रर करने के जायज़ होने पर दलील लाई गई है. हज़रत उमर रदि ल्लाहो अन्हो ने मिम्बर पर से फ़रमाया कि औसतों के मेहर भारी न करो. एक औरत ने यह आयत पढ़कर कहा कि ऐ इब्ने ख़त्ताब, अल्लाह हमें देता है और तुम मना करते हो. इसपर अमीरूल मूमिनीन हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया, ऐ उमर, तुझसे हर शख़्स समझदार है. जो चाहो मेहर मुक़र्रर करो. सुब्हानल्लाह, ऐसी थी रसूल के ख़लीफ़ा के इन्साफ़ की शान और शरीफ़ नफ़्स की पाकी. अल्लाह तआला हमें उनका अनुकरण करने की तौफ़ीक अता फ़रमाए. आमीन.

(18) क्योंकि जुदाई तुम्हारी तरफ़ से है.

(19) यह जिहालत वालों के उस काम का रद है कि जब उन्हें कोई दूसरी औरत पसन्द आती तो वो अपनी बीवी पर तोहमत यानी लांछन लगाते ताकि वह इससे परेशान होकर जो कुछ ले चुकी है वापस कर दे. इस तरीक़े को इस आयत में मना फ़रमाया गया और झूट और गुनाह बताया गया.

(20) वह अहद अल्लाह तआला का यह इरशाद है '०-फ़ इम्साकुन दि मअरूफ़िन फ़ तसरीहुम दि हिसानिन'' यानी फिर भलाई के साथ रोक लेना है या नेकूई के साथ छोड़ देना है. (सूरए बक़रह, आयत 229) यह आयत इस पर दलील है कि तन्हाई में हमबिस्तरी करने से मेहर वाजिब हो जाता है.

(21) जैसा कि जिहालत के ज़माने में रिवाज था कि अपनी माँ के सिवा बाप के बाद उसकी दूसरी औरत को बेटा अपनी बीवी बना लेता था.

(22) क्योंकि बाप की बीवी माँ के बराबर है. कहा गया है कि निकाह से हम-बिस्तरी मुराद है. इससे साबित होता है कि जिससे बाप ने हमबिस्तरी की हो, चाहे निकाह करके या ज़िना करके या वह दासी हो, उसका वह मालिक होकर, उनमें से हर सूरत में बेटे का उससे निकाह हराम है.

(23) अब इसके बाद जिस क़द्र औरते हराम हैं उनका बयान फ़रमाया जाता है. इनमें सात तो नसब से हराम है.

सूरए निसा - चौथा रूकू

(1) और हर औरत जिसकी तरफ़ बाप या माँ के ज़रिये से नसब पलटता हो, यानी दादियाँ व नानियाँ, चाहे क़रीब की हों या दूर की, सब माएं हैं और अपनी वालिदा के हुक्म में दाख़िल हैं.

(2) पोतियाँ और नवासियाँ किसी दर्जे की हों, बेटिचयों में दाखिल हैं.

(3) ये सब सभी हों या सौतेली. इनके बाद उन औरतों का बयान किया जाता है जो सबब से हराम हैं.

बैअत व मुरीदी का शरई जायज़ा

बैअत व मुरीदी क्या है ?

बैअत के लुग़वी मानी अहद व पैमान के हैं, उर्फ़े शरअ में बैअत व मुरीदी एक ख़ास क़िस्म के अहद व पैमाने का नाम है। वह यह कि महबूबाने ख़ुदा और औलिया अल्लाह के मुक़द्दस व हक़ परस्त हाथों पर गुनाहों से तौबा करना, नेक काम करने और बुराइयों से बाज़ रहने का वादा कर लेना और ख़ैर व सलाह के लिए पैमान कर लेना और उनके सिलसिले में दाख़िल हो जाना है, इस्लाम की रस्सी को मज़बूती से थाम लेने और ईमान की चहारदीवारी में मुकम्मल तौर पर दाख़िल होने के अज़मे मुहकम कर लेने का नाम बैअत व मुरीदी है।

बिला शक व शुबहा औलियाए किराम के सिलसिले में दाख़िल हो जाना और उनका मुरीद व मोतक़िद बन जाना सआदते दारैन और ख़ैर व बरकत का बेहतरीन ज़रिया है। अल्लाह तआला को भी महबूब है। चुनान्चे अपनी बारगाहे नाज़ में वसीला बनाने वालों की मिदहत सराई करते हुए खुद परवरदिगारे आलम इरशाद फ़रमाता है - (तर्जुमा) अल्लाह के मक़बूल बन्दे अपने रब की तरफ़ वसीला ढूंढते हैं कि उनमें कौन ज़्यादा मुक़र्रब है (ताकि जो सबसे ज़्यादा मुक़र्रब हो उसके वसीला बनायें) वह उसकी रहमत की उम्मीद रखते हैं और उसके अज़ाब से डरते हैं।'' (पारा 15 रुकूअ 5)

मुफ़स्सिरे कुरआन साहिबे मुआलिमु - त्तन्ज़ील मज़कूरा बाला आयत के तहत इरशाद फ़रमाते हैं - (तर्जुमा) ''आयत का मानी यह है कि वह लोग ग़ौर करते हैं कि कौन लोग अल्लाह के ज़्यादा क़रीब हैं, ताकि उनको अपने लिए वसीला बनायें।''

इस तफ़सीर से वाजेह है कि अल्लाह तआला के मुक़र्रब बन्दों को अपना वसीला बनाना और उनके दस्ते हक़ परस्त पर बैअत व मुरीद होना असलाफ़े किराम का तरीक़ा और एक मुस्तहसन क़दम है। एक और मुक़ाम पर कुरआने करीम अपने बेहतरीन लतायफ़ के ज़रिया तलाशे मुरशिद की दावत इस तरह देता है - ''ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो और उसकी तरफ़ वसीला तलाश करो और उसकी राह में मुजाहिदा करो इउस उम्मीद में कि तुम कामयाबी पा जाओगे।'' (पारा 6रुकूअ 9)

आयते करीम के जुमलों का हुस्ने तरतीब फ़लाह अहसान की दावत देता है। उसके लिए तक़वा शर्त है तो पहले उसका हुक्म हुआ कि इत्तकुल्लाह, अल्लाह से डरो, अब जबकि तक़वा पर क़ायम होकर राहे अहसान में क़दम रखना चाहता है और यह आदतन बेवसीलए शैख़ बेहद मुश्किल है लिहाज़ा दूसरे मरतबा में सुलूक से पहले पीर की तलाश को मुक़द्दम फ़रमाया कि (तर्जुमा) ''यानी, पहले हमसफ़र तलाश करो फिर रास्ता चलो''।

अब जबकि सामाने सफ़र मुहैय्या हो गया तो अस्ल मक़सूद का हुक्म दिया गया कि (तर्जुमा) ''उसकी राह में मुजाहिदा करो'' (तर्जुमा) ''ताकि फ़लाहे अहसान पा जाओ''।

बैअत व मुरीदी की दो क़िस्में मशहूर हैं।

मुरीदी की क़िस्में

1. बैअते बरकत, 2. बैअते इरादत

बैअते बरकत :

महज़ हुसूले बरकत के लिए किसी सच्चे सिलसिले में दाख़िल हो जाना बैअते बरकत है। आजकल यह बैअत आमतौर से राइज है। यह बैअत भी बहुत मुफ़ीद और दुनिया व आख़िरत में कारआमद है।

महबूबाने ख़ुदा के गुलामों के दफ़्तर में नाम लिख जाना और उनके सिलसिले से मुनसलिक होजाना बज़ाते खुद एक सआदत है।

बुलबुल हमीं कि क़ाफ़ियए गुल शिवद बस अस्त

यानी बुलबुल के लिए इतना ही काफ़ी है कि वह फूल का दोस्त हो जाये, हदीसे कुदसी है, (तर्जुमा) "यानी, यह अल्लाह वाले ऐसे लोग हैं कि उनके पास बैठने वाला भी महरूम नहीं रहता बल्कि कुछ न कुछ जरूर फैज़याब होता है नीज़ इस बैअत से महबूबाने खुदा के गुलामों से मुशाबहत मतलूब है हादीए आज़म सल्ललललहो अलैहि व आलिही वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं, (तर्जुमा) "जो जिस क़ौम से मुशाबिहत पैदा करे वह उन्हीं में से है।"+

बैअते इरादत -

इस बैअत का मफ़हूम यह है कि अपने इरादा व इख़्तियार से बाहर होकर अपने आपको मुरशिदे बरहक़ के हाथों में सुपुर्द कर देना और हर आसानी व दुशवारी और हर खुशी व नागवारी की हालत में पीर का हुक्म सुनना और उसकी इताअत करना उसके किसी हुक्म ने चूँ व चरा न करना, उसके हाथ में मुर्दा बदस्त ज़िन्दा होकर रहना। यह बैअत मसनून है। यह सालीकीन की बैअत कहलाती है। बुर्जुगाने दीन और औलियाए कामलीन का यही तरीक़ा है। यही बैअत हुजूरे अक़दस हादीए बरहक़ सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने सहाबए किराम रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन से लिया चुनान्चे हज़रत ओबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं - (तर्जुमा) "हमने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से इस बात पर बैअत की कि हर आसानी व दुशवारी और खुशी व नागवारी में हुक्म सुनेंगे और इताअत करेंगे और साहिबे हुक्म के किसी हुक्म में चूँ व चरा न करेंगे और जहाँ रहेंगे हक़ और सच बोलेंगे और इस बाबत किसी मलामतगर की मलामत से नहीं डरेंगे।" - मुस्लिम जि. 2 स. 25)

सही हदीसों से साबित है कि सहाबए किराम रसूले पाक साहिबे लौलाक सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से बैअत करते थे कभी हिजरत पर कभी जिहाद पर, कभी अरकाने इस्लाम पर, कभी आमाले सालिहा अदा करने पर और कभी कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले साबित क़दम रहने पर। कुरआने मजीद ऐसी बैअत पर अल्लाह तआला की रज़ा व खुशनूदी की शहादत देता है।

इरशादे बारी तआला है - "बेशक अल्लाह तआला राज़ी हुआ ईमान वालों से जब पेड़ के नीचे वह तुम्हारी बैअत करते थे, पस अल्लाह जानता है जो उनके दिलों में खुलूस है तो उसने उन पर सकीना नाज़िल फ़रमाया।"

मज़ीद इरशादे रब्बानी होता है कि ऐ महबूब - (तर्जुमा) "वह जो तुम्हारी बैअत करते थे वह तो अल्लाह ही से बैअत करते थे उनके हाथों पर अल्लाह का हाथ है तो जिस ने अपने बैअतक के अहद को तोड़ा तो उसने अपने बड़े अहद को तोड़ा और जिसने पूरा किया वह अहद जो उसने (पीर के हाथ पर) अल्लाह से किया था तो बहुत जल्द अल्लाह तआला उसे बड़ा सवाब देगा।" (सूरह फतह रुकूअ 1 आयत 9)

पीर व मुरशिद की क़िस्में -

पीर व मुरशिद की दो क़िस्में हैं -

1. मुरशिदे आम, 2. मुरशिदे ख़ास

मुरशिदे आम -

मुरशिदे आम की तफ़सील में कलामुल्लाह, कलामुर्रसूल कलामे अइम्मा शरीअत व तरीक़त और कलामे उलमाए दीन व औलियाए कामिलीन शामिल हैं। इस तौर पर कि अवाम का हादी कलामें उलमाए हक़ है और उलमा का रहनुमा कलामे अइम्मा और अइम्मा का मुरशिद अहादीसे रसूल और रसूल का पेशवा कलामे इलाही है। ज़ाहिरी फ़लाह हो या बातिनी बग़ैर उस मुरशिद के किसी को नहीं मिल सकता जो उससे जुदा होगा वह गुमराह और उसकी इबादत तबाह व बर्बाद होगी।

मुरशिदे ख़ास -

यह है कि बन्दा किसी ऐसे मुरशिद व पीर के हाथ में हाथ दे जो ज़रूरियाते दीन को जानता हो, सुन्नी सहीहुल अक़ीदा हो, सहीहुल आमाल और जामेए शरायते बैअत हो। अल्लाह के वलियों की रविश पर हो।

मुरशिदे ख़ास की अहमियत व ज़रूरत :-

यूँ तो अन्जामकार सबक़ते अज़ाब के बाद हर मोमिन के लिए निजात लाज़मी है किसी पीरी मुरीदी पर मौकूफ़ नहीं इसके लिए सिर्फ़ नबीए करीम सल्लल्लाहु

अलैहि व आलिही वसल्लम को पीर व मुरशिद जानना काफ़ी है जैसा कि अहादीसे कसीरा से साबित है ताहम बग़ैर अज़ाब के अव्वल वहला में निजात और दुख़ूले जन्नत नसीब हो जाये इसकी दो सूरतें हैं अव्वल यह कि अल्लाह तआला अपने ख़ास रहम व करम से बग़ैर हिसाब व किताब के जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे। (अल्लाह तआला मुझे भी इस जमाअत में शामिल फ़रमाये, आमीन) कि एलाने खुदावन्दी है (तर्जुमा) ''जिसे चाहे बख़्श दे और जिसे चाहे अज़ाब दे''

हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की शिफ़ाअत से बेशुमार अहले कबाइर भी ऐसी फ़लाह पायेंगे (ऐ अल्लाह हमको भी इस फ़ज़्ले अमीम में शामिल फ़रमा)

दोम, यह कि इंसान के आमाल, अफ़आल, अक़वाल और अहवाल ऐसे हों कि अगर उन्हीं पर ख़ात्मा हो जाये तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से पूरी-पूरी उम्मीद हो कि बिला हिसाब व किताब और बग़ैर सिबक़ते अज़ाब जन्नत में दाख़िल किया जायेगा। इस दूसरी सूरत की भी दो क़िस्में हैं :

1. यह कि क़ल्ब और जिस्म दोनों पर जितने अहकामे इलाहिया हैं सब बजा लाये न किसी गुनाहे कबीरा का इरतिकाब करे और न सग़ीरा पर इसरार करे। नफ़्स की ख़्वाहिशात अगर दूर न हों तो कम अज़ कम मुअत्तल और बेकार ज़रूर हों।

2. यह कि क़ल्ब व क़ालिब बुराइयों से ख़ाली और फ़ज़ायल से आयस्ता करके शिरके ख़फ़ी की रेशा दव्वानीयाँ दिल से दूर की जायें यहाँ तक कि तजल्लियाते इलाहिया के अलावा कुछ ज़ाहिर न हो। दिल इरादए ग़ैर से ख़ाली हो, ग़ैर नज़र से मादूम हो और हक़्क़े हक़ीक़त जलवा फ़रपमा हो।

जिसका कोई पीर नहीं उसका पीर शैतान :

इन दोनों क़िस्मों की फ़लाह के लिए एक कामिल पीर व मुरशिद की सख़्त ज़रूरत है ऐसी ही कामयाबी के लिये सुलतानुल आरिफीन सैय्यदना बायज़ीद बुस्तामी उर्फ़ तैफूर शामी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि जिसका कोई पीर नहीं उसका पीर शैतान है चुनान्चे सैय्यदना शहाबुद्दीन सोहरवरदी कद्दसा सिर्रहू अवारिफुल मुआरिफ़ में रिवायत नक़्ल फरमाते हैं कि सैय्यदना बायज़ीद बुस्तामी फ़रमाते हैं कि (तर्जुमा) जिसका कोई पीर नहीं उसका पेशवा शैतान है।

और रिसाला कुशैरिया में सैय्यदना अबुल क़ासिम कुशैरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मुरीद पर वाजिब है कि किसी पीर से तरबियत ले, इरशाद है कि - (तर्जुमा) ''मुरीद पर वाजिब है कि किसी पीर से तरबियत ले इसलिए कि बेपीरा कभी फ़लाह नहीं पाते हैं। बायज़ीद बुस्तामी जो फ़रकमाते हैं कि जिसका कोई पीर न हो उसका पीर शैतान है''।

हज़रत शाह तुराब अली क़लन्दर का क़ौल :

हज़रत शाह तुराब अली क़लन्दर क़द्दसा सिर्रहू फ़रमाते हैं - (तर्जुमा) ''यानी, यह बहुत ही मोतबर है कि जिसका कोई पीर नहीं उसका पीर इबलीस है''।

इस बारे में बुज़ुर्गों से यह हदीस भी मनकूल है :

''यानी, जो बेमुरीद हुए मर गया वह जाहिलियत की मौत मरा''।

सैय्यदना तुराब अली क़लन्दर फ़रमाते हैं कि (तर्जुमा) ''जिसने किसी पीर का दामन नहीं पकड़ा वह गोया ना समझ बच्चा और गुमराह आदमी है। पीर को मुन्तख़ब कर लो क्योंकि बग़ैर पीर के यह दुनयावी व दीनी सफ़र आफ़तों और ख़ौफ़ व ख़तर से भरा है''।

मौलाना रूम फ़रमाते हैं :

मोलवी हरगिज़ न शुद मौलाए रूम
ता गुलामे शम्स तबरेज़ी न शुद

(तर्जुमा) ''मैं वक़्त तक मौलाए रूम, मरजए ख़लायक़ और महबूबे ख़ास व आम नहीं हो सका जब तक कि हज़रत शम्स तबरेज़ के मुरीदों में शामिल नहीं हो गया।।''

●●

हज़रत क़ुत्बुल मदार का रोज़ा

रोज़े की हक़ीक़त रूकना है यानी खाने पीने और जिमाअं से अपने आपको रोकना। बज़ाहिर रोज़ा रहने के लिए एक वक्त मुक़र्रर है यानी सुब्ह सादिक़ से लेकर सूरज डूबने तक रोज़ा होता है। रात में रोज़ा नहीं होता।

फ़र्ज़ व वाजिब रोज़ों के अलावा नफ़ली रोज़े भी शरीअत में अहम्मीयत रखते हैं।

हदीस शरीफ़ में रोज़ा की बड़ी फ़ज़ीलत वारिद हुई है। कहीं यह आया है कि रोज़ा अल्लाह के लिए है और अल्लाह तआला ही उसकी जज़ा देगा। किसी हदीस में यह है कि रोज़ा की जज़ा बदला अल्लाह तआला खुद हो जायेगा यानी रोज़ादार को उसकी अस्ल मुराद मिल जायेगी। एक हदीस में है कि रोज़ा रोज़ादार की शिफ़ाअत करेगा। सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने यह भी फ़रमाया है कि जन्नत में एक रैयान नामी दरवाज़ा है जिससे सिर्फ़ रोज़ादार लोग ही दाख़िल होंगे। ग़रज़कि शरीअत में रोज़ादारों के लिए बड़ी-बड़ी बशारतें हैं। बहुत सारे इनआमाते ख़ुदावन्दी का रोज़ा दारों के लिए मुज़दा सुनाया गया है और बड़ी-बड़ी फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं। रोज़ा रखने में बन्दों की सेहत और ताक़त को भी मलहूज़ रखा गया है। हदीस शरीफ़ में आम मुसलमानों के लिए यह हुक्म है कि अपनी सेहत और ताक़त के लिहाज़ से नफ़ली रोज़े रखें।

नफ़ली रोज़े :

नफ़ली रोज़ों में मुन्दरजा ज़ेल रोज़े बड़ी अहम्मीयत रखते हैं :

अय्यामे बैज़ के रोज़े 9, 10 मुहर्रम, 9 ज़िलहज्जा, 15 शाबान, शव्वाल के छ: रोज़े।

रजब की सत्ताईसवीं का रोज़ा बहुत से नेक बन्दों के मामूलात में है।

अरबाबे अज़ीमत सौमे दाऊदी भी रखते हैं कि एक दिन रोज़ा है एक दिन इफ़तार लेकिन सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सेहत और ताक़त मलहूज़ रखकर नफ़ली रोज़े रखने का हुक्म दिया है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा हर दिन रोज़ा रखते थे। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उनसे फ़रमाया, ऐसा न करो। तुम्हारे बदन का भी तुम पर हक़ है, तुम्हारी आंखों का भी तुम पर हक़ है, तुम्हारी बीवी का भी तुम पर हक़ है यानी इन हुक़ूक़ का लिहाज़ रखो। नफ़ली रोज़ा रखो भी और नाग़ा भी करो। हर महीना में तीन रोज़े रख लिया करो। यह सौमुर्दहर है। (मन्जरी जि. 2 स. 122)

बिला शुब्हा रोज़ा बड़ा रूहानियत आफरी और नफ़्स शिकन अमल है। इससे क़ल्ब व रूह में बड़ी पाकीज़गी और लताफ़त पैदा होती है और ज़ब्ते नफ़्स में कमाल पैदा होता है। हदीस शरीफ़ में है कि आधा ज़ब्ते नफ़्स यही रोज़ा है। अलफ़ाज़ यह हैं : (तर्जुमा)

"हर चीज़ की ज़कात है और बदन की ज़कात रोज़ा है और रोज़ा सब्र यानी ज़ब्ते नफ़्स का आधा हिस्सा है।" (जमउल फ़वायद जि. 1 स. 152)

इसीलिए असहाबे मुजाहिदा बहुत ज़्यादा रोज़ा रखते हैं। सालिहीन का तर्जुबा है कि रोज़ा नफ़्स के तज़किया और क़ल्ब की सफ़ाई के लिए अदीमुल मिसाल है। इससे नफ़्स की जो पाकीज़गी और दिल में जो सफ़ाई आती है वह किसी और अमल से नहीं आती लिहाज़ा इसके मिस्ल कोई अमल नहीं नबीए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अबू उमामा बाहली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया।

अलैका बिस्सौम फ़ इन्नहू ला मिसा लहू (निसाई) यानी रोज़ा को लाज़िम पकड़ो क्योंकि उसकी कोई मिसाल नहीं है।

सौमे विसाल :

सौमे विसाल यानी मुसलसल और पै दरपै रोज़ा रखना। रसूलल्लाह सल्लललहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आम लोगों को इससे मुमानिअत फ़रमाई है कि हर आदमी इसकी ताक़त नहीं रखता। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जब सौमे विसाल रखा तो सहाबए किराम ने भी आपकी मुवाफ़िक़त में रोज़े शुरू कर दिये। हुज़ूर ने उनसे फ़रमाया तुम सौमे विसाल न रखो क्योंकि मैं तुम से किसी की मानिन्द नहीं हूँ कि मैं तुम्हारे रब के हुज़ूर रात गुज़ारता हूँ और वह मुझे खिलाता और पिलाता है। अरबाबे मुजाहिदा फ़रमाते हैं कि आपकी यह मुमानिअत शफ़क़त व मेहरबानी के लिए है न कि नहयी व मुमानिअत हराम बनाने के लिए। इस हदीस शरीफ़ में यह जुमला क़ाबिले ग़ौर है (तर्जुमा) "मैं तुम्हारे रब के हुज़ूर रात गुज़ारता हूँ वह मुझे खिलाता है और पिलाता है"

इस हदीस में खिलाने पिलाने की निस्बत रब की तरफ़ की गई है।

क़ुत्बुल मदार का खाने पीने से बेनियाज़ होना हदीसे सौमे विसाल की रोशनी में :

इससे ज़ाहिरी तौर से खाना पीना मुराद नहीं है बल्कि हदीस के अलफ़ाज़ "मुझे मेरा रब खिलाता पिलाता है" की तीन तरीक़े पर तौज़ीह की गई है।

1. बाज़ बुर्जुगों ने कहा है कि इससे कूव्वत मुराद है। मुहद्दिस अब्दुल हक़्क़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं,

"बाज़े गुफ़्ता अन्द कि मुराद बतआम व शराब ईजा कतूव्वत अस्त कि लाज़िम ऊस्त पस गोया फ़रमूद मुरा परवरदिगार मन कूव्वते अक्ल व शारिब मी बख़शद व इफ़ाज़ा मी कुनद चीज़े कि क़ायम मुक़ाम शराब व तआम मी गरदद व बदाँ कूव्वत बर ताअत व इबादत मी या बम बे ज़ोफ व ख़लल व फुतूर" (सफ़रूस्सआदत स. 295)

(तर्जुमा) कि बाज़ बुर्जुगों ने कहा है कि खाने पीने से मुराद इस हदीस में वह कूव्वत है जो खाने पीने के लवाज़िम से है पस गोया फ़रमाया, मेरा परवरदिगार खाने वाले और पीने वाले की कूव्वत मुझे बख़्श देता है और ऐसी चीज़ अता करता है जो खाने पीने के क़ायम मुक़ाम हो और उसकी वजह से ताअत व इबादत की कूव्वत पाता हूँ बग़ैर ज़ोफ़ व ख़लल के।

चूँकि क़ुत्बुल मदार हज़रत मुहम्मद रसूलल्लाह सल्लललहु अलैहि व आलिही वसल्लम का मज़हरे अतम और ख़लीफा होता है। (फुयूज़ूल हकम) उसका कल्ब नबीए करीम सल्लल्लहु अलैहि व आलिही वसल्लम के क़दमे मुबारक पर होता है।

लिहाजा अगर उसे भी रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की तिबईयते कामिला में अल्लाह तआला की तरफ़ से खिलाया पिलाया जाये और माद्दी ग़िज़ाओं से बेनियाज़ करके उसे ऐसी कूवत अता कर दी जाये जो खाने पीने के क़ायम मुक़ाम हो तो उसमें कोई तअज्जुब नहीं है। हज़रत कुत्बुल मदार सैय्यदना बदीअ उद्दीन ज़िन्हा शाह मदार रज़ियल्लाहु अन्हु को अल्लाह तआला ने अपनी सिफ़ते समदीयत से सरफ़राज़ करके ऐसी कूव्वत बख़्श दी थी कि आपको भूख प्यास की तकलीफ़ का कभी एहसास नहीं होता था। इस वस्फ़ से मुमताज़ होने के बाद 556 साल तक आपको दुनयवी ग़िज़ा की कोई हाजत नहीं हुई चुनान्चे हज़रत ईसा जौनपुरी ने आपसे दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर सुना है कि आप खाना पीना नहीं करते तो आपने जवाब में फ़रमाया कि मैं कुरआने हकीम की तिलावत करता हूँ और कुरआन नज़्म व मानी के मजमूए का नाम है पस जब मैं नज़्मे कुरआन की तिलावत करता हूँ तो मेरे जिस्म को कूव्वते ग़िज़ा मिल जाती है और जब मानीए कुरआन की तिलावत करता हूँ तो मेरी रूह को ग़िज़ा मिल जाती है तो जिसके जिस्म व रूह को कुरआन मजीद ही से कूव्वत ग़िज़ा मिल जाती हो उसे दुनिया की ग़िज़ा की क्या हाजत।

(खुताबाते निज़ामी, तारीख़े जौनपुरी व सलातीने शरक़ी)

हदीस सौमे विसाल में, युतइमुनी व युसक़ीनी, यानी रब की तरफ़ से खिलाने पिलाने की शरह बाज़ बुर्जुगों

लोगों से अपनी अक्ल के मुताबिक गुफ्तगू करो।

ने सैरी व सैराबी से की है। जनाब मुहद्दिस अब्दुल हक़ देहलवी अलैहिर्रहमतुर्रिज़वान फ़रमाते हैं :

"या मुराद ब तआम व शाब सैरी सैराबी अस्त कि बे तआम व शराब आँ हज़रत रा हासिल भी शुद व अलम जूअ व अतश एहसास नमी कर्द" (शरहे सफ़रूस्सआदत)

(तर्जुमा) या खाने पीने से मुराद सैरी व सैराबी है जो बग़ैर खाने पीने के आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को हासिल होती थी और भूख व प्यास की तकलीफ़ महसूस नहीं फ़रमाते थे।

रसूले कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की तिबईयत में हज़रत कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को भी अल्लाह तआला ने ऐसी कामिल सैरी व सैराबी अता फ़रमाई कि आपको कभी खाने पीने की तकलीफ का एहसास नहीं होता था। आपकी सीरत की आम किताबों में आपके न खाने पीने की यह वजह बताई गई है कि जब आप बहुक्मे रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम मदीना तैय्यबा से हिन्दुस्तान रवाना हुए तो समन्दरी रास्ता अपनाया। कश्ती में सवार लोगों के दरमियान आपने तबलीग़े दीन फ़रमाई। अहले कश्ती महरूमाने अज़ली थे। सभों ने तौहीद व रिसालत से इंकार किया। ग़ज़बे इलाही से कश्ती ग़रक़े आब हो गयी। इससे एक तख़्ता नुमूदार हुआ जिसके सहारे आप साहिल मालाबार बन्दर खम्बाज गुजरात पर ग्यारह दिन के भूखे प्यासे पहुँचे। भूख व प्यास से जिस्म निढाल था। रज़्ज़ाक़े आलम की बारगाह मे दुआ की, इलाही! कुछ ऐसा इन्तिज़ाम फ़रमा दे कि मुझे भूख व प्यास का एहसास न रहे और मेरा लिबास मैला व पुराना न हो। आपकी दुआ इसतौर से कुबूल हुई कि नबीए रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने आलमे मिसाल में जलवाबार होकर खुसूसी करम फ़रमाया। ज़ियारते दीदार की नेमत से सरफ़राज़ फ़रमाकर आप रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने मुबारक हाथ से 9 लुक़मे खिलाए और एक हुल्ला पहनाया और मुबारक हाथों को आपके चेहरे पर मल दिया। उसीकी बरकत से आपको कभी खाने पीने की ख़्वाहिश नहीं हुई और आपका लिबास कभी मैला व पुराना नहीं हुआ और चेहरा तजल्लियात के नूर से इतना रोशन और ताबनाक हो गया कि चेहरे पर सात सात नक़ाब डाले रहते थे और अगर कभी कभार रुख़े रौशन से कोई नक़ाब उठ जाता तो देखने वाले जलवों की ताब न लाकर बेइख़्तियार सजदारेज़ हो जाते। (दुर्रूल मुआरिफ़ स. 147, तज़क़िरतुल किराम स. 493)

गोया नबीए रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने मुबारक हाथों से जो ग़िज़ा खिलाई उसी से उम्र भर सैरी व सैराबी से नवाज़ दिया और आपसे भूख व प्यास की तकलीफ़ का एहसास जाता रहा।

3. हदीस सौमे विसाल में बाज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि रब तबारक व तआला के खिलाने पिलाने से मुराद ग़िज़ाए रुहानी है। शरहे सफ़रुस्सआदत मे मुहद्दिस देहलवी फ़रमाते हैं :

"अज़ इब्ने क़ीम दर किताब हुदा व अज़ इब्ने हाजिब दर लतायफ़ मनकूल करदा अन्द आँकि मुरादे तआम व शराब महसूस निस्बत न लाज़िम वे अज़ कूव्वत व शबअ बल्कि मुराद ग़िज़ाए रूहानी बूद कि अज़ मुआरिफ़ व लज़्ज़ाते मुनाजात व फ़ैज़ाने लतायफ़े इलाही कि बर दिल शरीफ़ वे सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वारिद मी गश्त व आँचेह तवाबेअ आनस्त अज़ अहवाले शरीफ़ा अज़ नईम रूह व शादी नफ़्स व रूह दिल व रोशनाई चश्म कि ब आँ चन्दाँ कूव्वत व कुदरत व मुसर्रत हासिल आयद कि बदन अज ग़िजाए जिस्मानी मुस्तग़नी शवद"। (सरहे, सफ़रूस्सआदत) (तर्जुमा) कि इब्ने क़ीम से किताबे हुदा में और इब्ने हाजिब से लतायफ़ में मन्कूल है कि इससे माद्दी ग़िज़ा मुराद नहीं है और न इसके लवाज़िम मुराद हैं। अज़ क़बीले कूव्वत व सैरी बल्कि इससे मुराद ग़िज़ाए रूहानी है। जो मुआरिफ़ मुनाजात की लज़्ज़तों और लतायफ़े इलाही के फ़ैज़ से आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के क़ल्ब पर वारिद होती थी और इससे आपके अहवाले शरीफ़ा के मुतअल्लिक़ात मुराद हैं यानी नेमते रूह, शदीए नफ़्स, राहते दिल और बीनाइए चश्म कि उनसे इस क़दर ताक़त कुदरत और मुसर्रत हासिल हो जाती थी

कि जिस्म ग़िज़ाए जिसमानी से बेनियाज़ हो जाता था।

हज़रत कुतबुल मदार सैय्यदना बदीअ उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के इस एजाज़ की मुकम्मल तसवीर और मज़हरे अतम थे। आप कसरत से ज़िक्रे इलाही में मसरूफ़ रहते, दायमी ज़िक्रे इलाही करते थे और हब्से दम बहुत ज़्यादा करते थे जिसकी बरकत से आपसे जिस्मानी कसाफ़तें दूर हो गई थीं। आप में मलकूती सिफ़ात पैदा हो गई थीं और आपको मुशाहदए इलाही और दीदारे ज़ाते ला मुतनाही हासिल था। तआमे मलकूती और रूहानी गिज़ा यानी ज़िक्रे इलाही आपकी ग़िज़ा बन गया था। चुनान्चे कुछ उलमाए ज़ाहिर ने आपसे दायमी तौर से न खाने पीने की वजह दरयाफ़्त की तो आपने जवाब में इरशाद फ़रमाया, अय्यामे क़हत में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की जियारत से छः माह तक भूख की कोई ख़्वाहिश न होती थी पर अगर मुस्तग़रक़े मारफ़ते किरदिगार मुशाहदए परवरदिगार में मह दर महव हो जाए और तआम मलकूती उसकी ग़िज़ा हो जाये तो क्या तअज्जुब है।

हज़रत कुत्बुल मदार की नज़र में दुनिया एक दिन की है :

एक दिन आपके मुअज़्ज़ज़ ख़लीफ़ा हज़रत काज़ी मुतहहर क़ल्ला शेर मारवीर. अलैहिर्रहमह ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु से सवाल किया कि हुज़ूर आपको खाने पीने की रग़बत क्यों नहीं होती तो आपने जवाब दिया, (तर्जुमा) ''मेरे नज़दीक दुनिया सिर्फ़ एक दिन की है और इसमें मेरे लिए रोज़ा है।''

इस फरमान का मतलब :

इसका मतलब यह है कि हम न तो दुनिया से कुछ हासिल करने की ख़्वाहिश करते हैं और न इसकी बन्दिश में आना चाहते हैं। हम ने इसकी आफ़तों को देख लिया है और इसके हिजाबात से बाख़बर हो चुके हैं इसलिए हम इससे अलग थलग हैं।

एक ग़लत फ़हमी का इज़ाला :

ज़हनों में यह सवाल पैदा हो सकता है किग हज़रत कुत्बुल मदार रजिडयल्लाहु तआला अन्हु पूरी ज़िन्दगी का रोज़ा रखा तो इसमें ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा के दिन भी आते हैं जिसमें रोज़ा रखना शरीअते इस्लाम में हराम है फिर यह क्योंकर आपसे सादिर हुआ तो इसका जवाब यह है कि शरीअत के उर्फ़ में रोज़ा का वक़्त फ़ज्रे सादिक़ से गुरूबे आफ़ताब तक का है जो इन्हीं लोगों के लिए है जो शरीअते ज़ाहिरा के मुकल्लफ़ हैं। उनके लिए सहर व अफ़तार का भी हुक्म है लेकिन अल्लाह के वह बन्दे जिनकी जिसमानियत की क़साफ़ते दायमी ज़िक्रे इलाही की बरकत से दूर हो गई हो और जिनका बातिन नूरे यज़दानी से लबरेज़ हो गया हो। जिनके शिकमों को ''बफ़हवाए इत्तसिफ़ू समदीयत से मुत्तसिफ़ कर दिया हो और उनमें फरिश्तों की ख़सलत पैदा कर दी गई हो। उनकी नज़र में उनकी ज़िन्दगी के अय्याम की सुब्ह व शाम और तुलूअ व गुरुब की कोई हक़ीकत नहीं होती वह अपनी जात को फ़ानी करके अल्लाह के साथ इस तरह बाक़ी हो जाते हैं कि उन्हें गर्दिशे लैलो नहार का एहसास ही नहीं होता, वह अपनी आंखों से पूरी दुनिया को हमेशा इस तरह देखते हैं जैसे हथेली पर राई का दाना कि जिसमें सूरज डूबता ही नहीं। वह अपनी ज़िन्दगी की दुनिया को सिर्फ़ एक दिन समझते हैं उनका वह दिन भी खुदा के लिए, खुदा के ज़िक्र के लिए वक़्फ़ होता है। उनके पेशे नज़र रूसले अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का यह फ़रमान होता है :

(तर्जुमा) ''यानी, तुम अपने शिकमों को भूखा, अपने जिगरों को प्यासा और अपने जिस्मों को ग़ैर आरास्ता रखो ताकि तुम्हारे दिल अल्लाह तआला को दुनिया में ज़ाहिर तौर पर देख सकें।''

वह मुशाहदए हक़ से सैराब होते हैं और दीदारे इलाही की मुसर्रत में महव व महज़ूज़ रहते हैं। यही उनके लिए इफ़तार है और यही सहरी है वह ज़माने के क़ैद व बन्द से आज़ाद है शरीअते ज़ाहिरा की तकलीफ़ उनसे हटा ली जाती है। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

●●

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सैयद बदीअ उद्दीन कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु के एरास और मेलों का तारीख़ी पसमन्ज़र

अगर एक तरफ़ सैकड़ों बरस क़ी क़दीम तारीख़ के औराक़ शाहिद हैं तो दूसरी तरफ़ ऐनी मुशाहिदात की रोशनी में यह बात रोज़े रोशन की तरह अयाँ है कि शहंशाहे औलियाए किबार सैयद बदीअ उद्दीन कुत्बुल मदार के उर्स और मेले इस्लामी दुनिया के मुख़तलिफ़ मुमालिक बिलखुसूस एशिया के मुख़तलिफ़ जज़ायर में बड़े तुज़्क व एहतेशाम से मुनअक़िद होते हैं। कई सौ बरस से आज तक कुत्बुल मदार के नाम से मौसूम मुक़द्दस मुक़ामात पर एरास और मेलों का यह सिलसिला आज तक जारी है।

सुन्नी सहीहुल अक़ीद मुसलमानों की हक़ीक़ी पहचान यह भी है कि वह खुदावन्दे कुद्दूस के बरगज़ीदा बन्दों की अज़मत व मरतबत को क़ायम रखने और उसको ज़िन्दा व जावेद बनाने के लिए कम से कम साल में एक मर्तबा औलियाए किराम के पाकीज़ा मज़ारात पर उर्स और मेले का इन्इक़ाद करते हैं। इस ज़िम्न में तमाम [illegible]लियाए किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन के एरास की मुक़द्दस तक़रीबात इसका मुस्तहकम सुबूत हैं। यह हक़ीक़त है कि वलियों के मज़ारात पर मेले लगते हैं लेकिन इस सिलसिले में अज़ीम बेमिसाल व लाज़वाल शक्सियत शहंशाहे विलायत सैयद बदीअ उद्दीन कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु की तारीख़ सबसे मुमताज़ और जुदागाना नज़र आती है। तज़किरा निगारों की मुहक्क़िाना तारीख़ और दुनिया के मुख़तलिफ़ मुमालिक में फैले हुए बाहमी रवाबित से पता चलता है कि कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जहाँ भी क़दम रंजा फ़रमाया और जिन मुक़ामात पर चिल्लाकशी फ़रमाई वहाँ पर शमए इस्लाम के परवानों और आशिक़ाने औलियाए किराम ने आपकी इसालमी तबलीग़ी सरगर्मियों की यादें ताज़ा रखने के लिए एक इमारत तामीर कर दी। कहीं कहीं यह इमारत बहुत बड़े पैमाने पर कायम हैं और कहीं कहीं हुजरों और मज़ारों की सूरत में मौजूद हैं। बरक[illegible] इन्हीं इस्लामी निशानियों को कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु की चिल्लागाहों का नाम दिया गया और पूरी दुनिया में जहाँ जहाँ यह निशानियाँ मौजूद हैं वहाँ कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम से सालाना उर्स की शक्ल में मेला लगता है और हर मेले में लाखों की तादाद में बन्दिगाने खुदा शरीक होतें हैं और इन्हीं चिल्लागाहों पर हाज़िर होकर कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु के तवस्सुल से अपनी हाजत रवाई के लिए दुआएँ करते हैं। अल्लाह तबारक व तआला कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु के वसीले से मांगने वालों के दामने मुराद को रहमतों के ख़ज़ानों से लबरेज फ़रमा देता है। यह इम्तियाज़ी खुसूसियात सिर्फ़ कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु के हिस्से में आई हैं।

838हिजरी में कुत्बुल मदार ने जिस महीने में दुनिया से रेहलत फ़रमाई वह जमादिल ऊला का महीना था आपके बिसाल के बाद आपके अक़ीदतमन्दों ने जो पूरी दुनिया में फैले हुए हैं इस महीने का नाम ही मदार का महीना रख दिया। हनूज़ यह सिलसिला आज तक क़ायम है। अरबाबे होश व दानिश और हक़ व दयानत का सरमाया रखने वाले अफ़राद ज़बान व क़लम से इस ताबनाक तारीख़ की ताईद व तौसीक़ फरमाते हैं। चुनान्चे 17 जमादिल मदार को पूरी इस्लामी दुनिया में कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम से मदार के उर्स की तक़रीबात क़ायम हो गई और मदार के मेले लगने लगे। कहीं कहीं इन मेलों ने मुक़ामी रुसूमात के मुताबिक़ अपनी पहचान क़ायम कर ली। पाकिस्तान की सूबाई रियासत सिंध और पंजाब में, अफ़ग़ानिस्तान के काबुल के इलाके में, हिन्दुस्तान के गुजरात और राजस्थान के मुख़तलिफ़ मुक़ामात पर इन मेलों को 'मदार का चराग़' कहा जाता है। चूंकि कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु के चिल्लों पर इन मेलों में लाखों लोग अपनी मन्नत और

अगर दुनियां में कामयाबी चाहते हो तो अपने वालिदेन की खिदमत करो।

मुरादों के चराग़ रोशन करते हैं और दुआएं मांगते हैं इसलिए इनको 'मदार का चराग़' कहा जाता है।

कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु से मौसूम मुक़मात पर जो मेले लगते हैं उनमें सबसे ज़्यादा मशहूर और तारीख़ी मेला राजस्थान के भरतपुर ज़िला में 'डीग' के मुक़ाम पर लगता है वहाँ पर यह मेला 'मदार की छड़ियों का मेला' कहलाता है। जिसकी तारीख़ यह है कि क़दीम ज़माने से ही हज़ारों लोग इस मुक़ाम पर कुत्बुल मदार की चिल्लागाहों पर जमा होते और बहुत बड़े क़ाफ़ले की सूरत में मकनपुर शरीफ़ की तरफ़ रवाना होते थे चूंकि आमद व रफ़्त के ज़राए मफ़कूद थे इसलिए लोग पा पियादा क़ाफ़लों के साथ चलते थे। मकनपुर शरीफ़ पहुँचने के लिए अक़ीदतमन्दों के यह क़ाफ़ले भरतपुर से दो हिस्सों में तक़सीम होकर रवाना होते एक क़ाफ़ला भरतपुर से चलकर आगरा, फ़िरोज़ाबाद, मैनपुरी होता हुआ मकनपुर शरीफ़ पहुँचता और दूसरा क़ाफ़ला मेरठ, बरेली, बदायूँ, शाहजहांपुर होता हुआ मकनपुर शरीफ़ पहुँचता। यह क़ाफ़ले जहाँ भी क़याम करते वहाँ मदार के मेले लगना शुरू हो गये। चूँकि भरतपुर में कुछ क़दीमी रिवायात व रुसूमात इस तरह क़ायम थीं कि हज़ारों लोग कुछ रंगी हुई छड़ियों को मेले में लाते और चिल्ला कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु के रूबरू रखकर अपनी हाजत रवाई की दुआएं करते इसलिए इस मेले को "मदार की छड़ियों का मेला' कहा जाने लगा।

उर्दू ज़बान के मशहूर शायर "मीर हसन" 1765 ई. में जब 'मदार की छड़ियों के मेले' के साथ भरतपुर से चलकर मकनपुर आए तो उन्होंने अपनी मशहूर व मारूफ़ तसनीफ़ "मसनवी गुलज़ारे इरम" में इस मेले और मदार की छड़ियों का बड़ा दिलफ़रेब बयान किया है।

'मदार की छड़ियों के मेले' के साथ मीर हसन का मकनपुर शरीफ़ आना हिन्दुस्तान की ज़र्री तारीख़ का अनोखा बाब है। दरअस्ल 1765 ई. में लखनऊ शहर अवध रिसायत के दारूल हुकूमत होने का दरजा हासिल कर चुका था और अवध की इस राजधानी में नवाब आसिफुद्दौला करोड़ों और अरबों रुपये सर्फ़ करके इसको दूसरा दिल्ली बनाना चाहते थे। नवाब का मक़सदत यह था कि दिल्ली की मानिन्द लखनऊ में भी तालीम याफ़ता अफ़राद की जमाअतें क़ायम हो जाएं। दानिशवर लखनऊ की तालीमी सरगर्मियों में हिस्सा लेकर इस शहर के इल्मी माहौल को जिला बख़्शें। दूसरी तरफ़ दिल्ली की हालत यह थी कि इसी ज़माने में यानी अट्ठारहवीं सदी ईसवी के निस्फ़ आख़िर में अहमद शाह अबदाली और नादिर शाह दुर्रानी के पै दर पै हमलों ने दिल्ली में हैजान बरपा कर दिया था। तालीम याफ़ता अफ़राद, अहले क़लम, शोअरा, उलमा और दानिशवर हज़रात दिल्ली छोड़कर ऐसे महफ़ूज़ व मामून मुक़ामात की तलाश में निकल पड़े थे जहाँ वह अपने इल्म व फ़न की हिफ़ाज़त भर कर सकें और अवाम को उससे बहरामन्द होने की तलक़ीन भी करें।

इस ज़िम्न में 'मसनवी गुलज़ारे इरम' के ख़ालिक़ 'मीर हसन' दिल्ली छोड़कर भरतपुर पहुँचे और वहाँ से कुत्बुल मदार की छड़ियों के मेले के साथ मकनपुर आ गए और यहाँ कुछ दिन क़याम करने के बाद लखनऊ रवाना हुए। उनके अशआर की पुरसोज़ कैफ़ियात और दिलकश अन्दाज़े बयान से मेले में उनके हमराह चलने वालों की मुक़द्दस अक़ीदत मन्दियों का ज़िक्र मिलता है।

आज मकनपुर शरीफ़ में बारगाहे कुत्बुल मदार में साल में दो बहुत बड़े-बड़े मेले लगते हैं जिनमें लाखों लोग शरीक होते हैं। एक मदार के महीने की 15, 16, 17 तारीख़ को और एक हिन्दी महीने की बसन्त पंचमी के हिसाब से। बसन्त पंचमी के मेले की तारीख़ भी निहायत दिलचस्प है। दरअस्ल मदार महीने के हिसाब से मेला लगना शुरू हुआ तो कुछ ही अर्से शरीफ़ के माह में ही बसन्त पंचमी की तारीख़ थी। हिन्दुस्तान की तहज़ीब व सक़ाफ़त के एतबार से बसन्त का दिन मौसमे बहार की आमद की दस्तक देता है। इसलिए इसको बड़े तुज़्क व एहतेशाम के साथ तेवहार की शक्ल में मनाते हैं चूंकि कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु की बारगाहे अक़दस में मुसलमानों के अलावा बड़ी तादाद में ग़ैर मुस्लिम भी अपनी हाजतों को लेकर हाज़िर होते हैं इसलिए बसन्त पंचमी के दिन इन लोगों ने कसीर तादाद में कुत्बुल

सिलसिलए मदारिया की ख़ानक़ाहें

ख़ानक़ाह मदारिया कोल्हवा बन (दरगाह) ज़िला मऊनाथ भन्जन यू.पी.

यह सिलसिलए आलिया बदीइया मदारिया की तक़रीबन साढ़े पाँच सौ साला क़दीम ख़ानक़ाह उत्तर प्रदेश के मशहूर व मारूफ़ इल्मी व मज़हबी कस्बा घोसी (ज़िला मऊ) से दस किलोमीटर दूर शिमाल मशरिक़ी सम्त कोल्हवाबन में वाक़ेअ है। मज़कूरा ख़ानक़ाह का शुमार सिलसिलए आलिया मदारिया की मशहूर व मारूफ़ ख़ानक़ाहों में होता है। इस ख़ानक़ाह के बानी मबानी हुज़ूर सैयदना सैयद अहमद बादया पा मदारी क़द्दसा सिर्रहू हैं। आपकी विलादत बा सआदत पाँचवीं सदी हिजरी में शहरे बग़दाद के अन्दर हुई। आपके वालिदे गिरामी हज़रत सैयद महमूद और वालिदा मख़दूमा सैयदा बीबी नसीबा अलैहिर्रहमा हैं। आपकी वालिदा मख़दूमा सैयदा बीबी नसीबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हुज़ूर पुरनूर सैयदना सरकार ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सगी हमशीरा हैं। इस निस्बत से आप हुज़ूर सरकार ग़ौसे आज़म कद्दसा सिर्रहू के सगे भाँजे हैं। आपको शरफ़े ख़िलाफ़त व इजाज़त हुज़ूर सैयदना सैयद बदीअ उद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार कुत्बुल मदार कद्दसा सिर्रहू से हासिल है। जैसा कि ''बहरे ज़ख़्ख़ार'' के मुसन्निफ़ अल्लामा शैख़ वजीह उद्दीन अशरफ़ अलैहिर्रहमह ने तहरीर फ़रमाया कि ''आँ नुज़हत आराए चमने तौहीद आँ तरावते पैराए गुलशने तजरीद आँ ताज बख़्शे सलातीन व फुक़रा आँ मशग़ूले हवाए दोस्त सैयद अहमद बादपा मुरीद व ख़लीफ़ा सैयद बदीअ उद्दीन कुत्बुल मदार अस्त''।

नीज़ आपके सवानेह निगार जनाब सैयद शफ़ीक़ साहब ने भी तज़किरा सैयद अहमद बादयपा में रक़म फ़रमाया है कि ''सैयद अहमद अलमारूफ़ ब मीरां शाह क़द्दसा सिर्रहू हज़रत सैयद बदीअ उद्दीन कुत्बुल मदार ज़िन्दा शाह मदार के अजल्ल व मोतमंद व अख़स्सुल ख़वास ख़लीफ़ा है।'' (तज़किरा सैयद अहमद बादपा)

अलावा अज़ीं साहिबे मिरअतुल इसरार अल्लामा अब्दुल रहमान अलवी चिश्ती क़द्दसा सिर्रहू ने भी अपनी तसनीफ़ ''मिरअते मदारी'' में हुज़ूर सैयद अहमद बादया पा मदारी अलैहिर्रहमह को हुज़ूर कुत्बे वहदत सैयदना सैयद बदीअ उद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार हलबी मकनपुरी क़द्दसल्लाह सिर्रहू के जलीलुल क़द्र खुलफ़ा में शुमार किया है।

नीज़ अल्लामा सैयद इक़बाल जौनपुरी ने भी अपनी मशहूरे ज़माना तसनीफ़ ''तारीख़ सलातीने शरक़िया व सूफ़ियाए जौनपुर'' में हज़रते वाला को हुज़ूर मदारे पाक का मुक़र्रब तरीन मुरीद व ख़लीफ़ा तहरीर किया है। अल्लामा इक़बाल जौनपुरी के आलावा दौरे हाज़िर के मशहूर मुसन्निफ़ व मुवल्लिफ़ हज़रत मौलाना डाक्टर मुहम्मद आसिम आज़मी उस्ताज़ मदरसा शम्सुल उलूम घोसी ज़िला मऊ ने भी अपनी किताब ''तज़किरा मशाइख़े एजाम'' में हज़रत सैयदना सैयद अहमद बादया पा को हुज़ूर मदारूल आलमीन क़द्दसा सिर्रहू के नामवर खुलफ़ा की फ़ेहरिस्त में दाख़िल फ़रमाया है।

तज़किरा निगारों ने आपकी विलादत बा सआदत से मुतअल्लिक़ तहरीर फ़रमाया है कि आप और आपके बड़े भाई हुज़ूर सैयदुल औलिया सैयदना सैयद मुहम्मद जमाल उद्दीन जानेमन जन्नती मदारी क़द्दसा सिर्रहू कुत्बे वहदत हुज़ूर सैयदी सरकार सैयद बदीअ उद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दुआए पुर असर से बीबी नसीबा के यहाँ तवल्लुद हुए। इस सिलसिले में हज़रत मुल्ला कामिल रहमतुल्लाह अलैह की किताब ''समरातुल कुद्दस'' या आरिफ़े रब्बानी हज़रत सैयद अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहि की किताब ''मुन्तख़बुल अजायब फ़ी इज़हारे इसरारूल ग़रायब'' या हज़रत सैयद ज़िया उद्दीन अहमद अलवी मुजद्ददी अमरोहवी की किताब ''मिरअतुल

अक्लमन्द वो है जो ताकत के बावजूद बदला न ले।

अनसाब'' देखी जा सकती हैं। नीज़ इसका तज़किरा हुज़ूर सैयदना ख़्वाजा मख़दूम समा उद्दीन सोहरवरदी अलैहिर्रहमह की दरगाहे आलिया के सज्जादा नशीन हज़रत अल्लामा डाक्टर ज़हूरूल हसन शारिब एम.ए., एल.एल.बी., पी.एच.डी. ने अपनी किताब ''खुमख़ानए तसव्वुफ़'' में और अल्लामा फ़सीह अकमल क़ादरी ने ''सीरते कुत्बे आलम'' में और उस्ताजुल मशाइख़ फ़क़ीहे उम्मत हज़रत अल्लामा अलहाज अबुल हम्माद मुफ़्ती मुहम्मद इसराफ़ील शाह अलवी मदारी ने अपनी तसनीफ़े लतीफ़ ''नसीबतुल अबरार'' अलमारुफ़ ब जमाले कुत्बुल मदार हज़रतुल उस्ताज़ मुहम्मद सफ़ी उल्लाहब शामीमुल क़ादरी ने सहमाही इमाम अहमद रज़ा मैगज़ीन जनवरी ता मार्च 2008में बड़ी तफ़सील के साथ फ़रमाया है।

मज़कूरा तमाम किताबों का खुलासा यह है कि हज़रत सैयदा बीबी नसीबा के यहाँ कोई औलाद नहीं थी। एक रोज़ अपने बिरादरे गिरामी हुज़ूर ताजदारे विलायत सैयदना सरकार ग़ौसे पाक क़द्दसा सिर्रहू की बारगाह में हुसूल औलाद का अरीज़ा लेकर हाज़िर हुई तो आपने अपनी हमशीरा हज़रत बीबी नसीबा को हुज़ूर सैयदना मदारूल आलमीन क़द्दसा सिर्रहू की तरफ़ रूजूअ फ़रमाया। हुज़ूर सैयदना सरकार ग़ौसे पाक क़द्दसा सिर्रहू के हस्बे हुक्म आप बारगाहे मदारियत पनाह में हाज़िर हुई और दुआ की दरख़्वास्त की। हुज़ूर वहदत सैयदना सरकार मदारे कायनात ने दुआ फ़रमाई और अज़राहे बशारत इरशाद फ़रमाया की बीबी जाओ अल्लाह तआला तुम्हें एक के बाद दीगरे दो फ़रज़न्द अता फ़रमायेगा। चुनान्चे आपके इरशाद के बमोजिब अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने आपको दो फ़रज़न्दों से नवाज़ा। उनमें से बड़े साहबज़ादे हज़रत सैयद जमाल उद्दीन जानेमन जन्नती और छोटे साहबज़ादे सैयद अहमद बादया पा क़द्दसा सिर्रहुमा हैं।

समरातुल कुदस में तहरीर है कि हुज़ूर मदारे पाक क़द्दसा सिर्रहू एक अरसए दराज़ के बाद दोबारा बग़दाद तशरीफ़ लाए तो बीबी नसीबा ने हस्बे वसीअत सरकार ग़ौसे पाक अपने दोनों फ़रज़न्दों को जो कुत्बुल मदार की दुआ से ही पैदा हुए थे बारगाहे मदारियत में पेश फ़रमाया। हज़रत कुत्बुल मदार ने बीबी नसीबा के दोनों फ़रज़न्दों को दिल व जान से कुबूल फ़रमाया और इन्हें लेकर इस्तम्बूल की तरफ़ रवाना हो गये। इस मुक़ाम पर आपने दोनों अज़ीज़ों को इल्मे सौरी की तालीम के लिए हज़रत अब्दुल्लाह रूमी के हवाले फ़रमाया और खुद एक पहाड़ी की घाटी में हब्से दम के अशग़ाल में वाहिदे हक़ीक़ी के ज़िक्र में मशग़ूल हो गये। इस जगह चन्द साल गुज़ारने के बाद आप खुरासान रौनक़ अफ़रोज हो गये। बहरे ज़ख़्ख़ार के मुसन्निफ़ अल्लामा हज़रत शेख़ वजीह उद्दीन अशरफ़ लिखते हैं कि ''हज़रत सैयद अहमद बादया पा हज़रत सैयदना शाह मदार के साथ समरक़न्द होते हुए हिन्दुस्तान की तरफ़ रवाना हुए और दौराने सफ़र खाना पीना बिल्कुल बन्द कर दिया। दो हफ़्ते तक खाने पीने की कोई चीज़ मयस्सर न हुई जिसकी वजह से हज़रत सैयद अहमद बादया पा भूख से बेताब हो गये। शाह मदार को इसका इल्म हुआ तो उन्होंने मीर सैयद अहमद बादपा से कहा कि तुम जानिबे जुनूब चन्द क़दम जाओ वहा एक खुशनुमा पानी का चश्मा मिलेगा। उसके किनारे हरा भरा दरख़्त होगा जिसके साये में एक मर्दे हक़ीर अपने दोस्तों का खाना रखकर उनका इन्तिज़ार करता होगा। वह खाना तुम्हारे नसीब का है। जब वह मर्दे तुम्हें वह खाना पेश करे तो बिस्मिल्लाह पढ़कर खा लेना और अल्लाह तआला की नेमत का शुक्र अदा करके अपना हाथ अपने चेहरे पर फैर लेना और उस मर्द से कहना कि तुमने मुझे सात मर्दों का खाना खिलाया है अल्लाह तआला इसके बदले तुमको सात अक़लीम या सात पुश्त की बादशाहत देगा। चुनान्चे मीर सैयद अहमद बादपा उस जगह गये। उस मर्दे हक़ीर ने देखा कि यह मर्दे सालेह सख़्त भूखा है यह सोचकर पूरा खाना मीर सैयद अहमद बादपा अलैहिर्रहमह के सामने रख दिया। उन्होंने अपने पीर व मुरशिद के हुक्म के मुताबिक़ खाकर उस मर्दे हक़ीर के हक़ में उन्हीं लफ़्ज़ों में दुआ की। वह मर्दे हक़ीर तैमूर लंग था।

बादहू आप हुज़ूर मदारे पाक के साथ मुख़तलिफ़ दयार व अमसार की सियाहत फ़रमाते हुए हिन्दुस्तान

सुरः यासीन कयामत के दिन प्यास से बचायेगी।

तशरीफ़ लाये और अरसए दराज़ तक हुज़ूर मदारे पाक के कुर्बे ख़ास में रहे और विलायत की आला मनाज़िल पर आपकी खुसूसी तवज्जोहात के बदौलत फ़ैज़याब हुए।

कोल्हवाबन में आपकी आमद का तज़किरा करते हुए मशहूर फ़ाज़िल हज़रत अल्लामा डाक्टर मुहम्मद आसिम आज़मी उस्ताज़ मदरसा शमसुल उलूम घोसी ज़िला मऊ जनाब मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ अमजदी की जिन्दगी के मुख़तलिफ़ गोशों पर लिखी गई किताब "मुआरिफ़ शारेह बुख़ारी" में अपने मक़ाला "शारेह बुख़ारी के क़स्बा घोसी का एक तारीख़ी जायज़ा' में लिखते हैं कि "शरक़ी अहदे हुकूमत में घोसी से तक़रीबन दस किलोमीटर दूर शिमाल मशरिक़ी सम्त कोल्हबाबन (दरगाह) में हज़रत सैयद अहमद बादपा रहमतुल्लाह अलैह तशरीफ़ लाये। आपके रूहानी फ़ुयूज़ व बरकात से घाघरा के जुनूबी दीवारा पर आबाद लोगों ने इस्लाम की दौलत को सीने से लगाया और जो लोग मुशर्रफ़ ब इस्लाम न हो सके वह भी आपके इरादतमन्दों में शामिल हो गये। हज़रत सैयद अहमद की ज़िन्दगी में मौसमे बाराँ में मुसलसल सात जुमेरात को आपकी ज़ियारत के मुसलमान और हिन्दू आस्तानए आलिया पर हाज़िरी देते जिसे बारे आम कहा जाता था। मीरां बाबा के पर्दा फ़रमाने के बाद आज भी वह रिवायत बाक़ी है और लोग जूक़ दर जूक़ बिला तफ़रीक़े मज़हब व मिल्लत हज़रत की चिल्लागाह की ज़ियारत के लिए जाते हैं और फ़ुयूज़ व बरकात से मालामाल होते है। हाँ बारे आम कसरते इस्तेमाल से (बराम) हो गया। सैयद अहमद बादपा हज़रत शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह के हमराह हिन्दुस्तान आए। मशहूर है कि बग़दाद शरीफ़ के बाशिन्दे थे। यह हज़रत मदार की ख़िदमत में हाज़िर रहे। उनके विसाल के बाद 844 हिजरी में हज़रत मदार साहब की वसीयत के मुताबिक़ घोसी कोल्हवाबन दरगाह आये।

घोसी व अतराफ़ में मीराँ बाबा और मीर बाबा के नाम से मशहूर है। शाह मदार ने अपनी वफ़ात से क़ब्ल अपने सत्तर मख़सूस हमराहियों को तन्हा तन्हा बुलाकर वसीयत व नसीहत की और हर एक के लिए उसके मुक़ामे विलायत को मुतअय्यन करके रुश्द व हिदायत की ख़िदमत सुपुर्द की। चुनान्चे शाह मदार के विसाल के बाद उनके तमाम हमराही अपने मुक़ामे विलायत पर जाकर मसरूफ़े रूश्द व हिदायत हुए और वहीं फ़ौत हुए। हज़रत सैयद अहमद बादपा भी हज़रत मदार की वफ़ात 844 हिजरी के बाद अपने मुक़ामे विलायत कोल्हाबन में वारिद हुए और अपनी जिद्दोजुहद से इस्लाम का अहम फ़रीज़ा अंजाम दिया। इस्लाम दुश्मन अनासिर को ज़ेर करके उस दयार को इस्लाम और मुसलमानों के लिए साज़गार बनाया। फ़रीद ख़ाँ सूरी अपने ज़मानए तालिब इल्मी में जौनपुर के अन्दर हज़रत सैयद अहमद बादपा की अज़ीम रूहानी शख़्सियत का ज़िक्र सुन चुका था जब उसके बाप हसन सूर ने सहसराम की जागीर के इन्तिज़ाम से उसको बे दख़्ल कर दिया तो वह हैरानी व परेशानी के आलम में कोल्हवाबन हाज़िर हुआ। हज़रत ने हालात दरयाफ़्त किये और फ़रमाया आजुरदा और परेशान होने की ज़रूरत नहीं हिम्मत से काम लो जल्द ही तुम्हें जागीर मिल जायेगी और हिन्दुस्तान की बादशाहत भी हासिल होगी। उस वक़्त रिआया की भलाई के काम अंजम देना, अद्ल व इन्साफ़ पर क़ायम रहना। शेरशाह सूरी रूख़सत होकर सहसराम आ गया। उसने मुतअद्दिद हाकिमों और अमीरों की मुलाज़िमत इख़्तियार की और अपनी कूव्वत मुजतमअ करता रहा। यहाँ तक कि बिहार का हाकिम बन गया। जब बादशाह हुमायूँ बंगाल से आगरा जा रहा था चौसा के मुक़ाम पर शेर शाह सूरी ने उस पर हमला कर दिया और सफ़र 964 हिजरी मुताबिक़ 1539 ई. में उसको शिकस्ते फ़ाश दे दी और उसे हिन्दुस्तान से निकाल कर दोबारा पठानों की हुकूमत क़ायम कर दी। इस तरह सैयद अहमद बादपा की पेशीन गोई से वह हिन्दुस्तान का बादशाह बन गया। जिनका नाम अपनी अद्ल गुस्तरी और बेपनाह तन्ज़ीमी सलाहियतों और अवामी फ़लाह व बहबूद के कारनामों की वजह से आज भी तारीख़े हिन्द के सफ़हात पर ज़र्री हुरूफ़ में लिखा जाता है। शेर शाह सूरी ने अपनी हुकूमत के ज़माने में दूसरी बार कोल्हवाबन का सफ़र किया। हज़रत सैयद अहमद बादपा की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुआ। उनके लिए एक वसीअ क़िला नुमा अहाता तामीर कराया जिसके वस्त में एक चहार दीवारी के अन्दर

रिश्वत देने और लेने वाला जहन्नम में जायेंगे।

एक चबूतरा बनवाया जिसे हज़रत सैयद अहमद बादपा की नशिस्तगाह या चिल्लागाह बताया जाता है।

शेर शाह की बड़ी बेटी शहज़ादी माह बानो कोल्हवाबन में मुक़ीम हो गई थी। रोज़ा और माह बानो के इख़राजात के लिए शेर शाह ने बारह गावों की माफ़ी का परवाना दे दिया और माह बानो के नाम एक गाँव आबाद किया जिसका नाम चक बानो उर्फ़ दरगाह है। इसी नाम पर कोल्हवाबन को अब दरगाह के नाम से याद किया जाता है। माह बानो ने बहत्तर साल की उम्र में वफ़ात पाई और अन्दरूने अहाता मदफ़ून हुई। शेर शाह के बाद जितने बादशाह तख़्त नशीन हुए उन्होंने न सिर्फ़ बारह गाँव की माफ़ी को क़ायम रखा बल्कि उसमें मज़ीद इज़ाफ़ा किया। हज़रत सैयद अहमद बादपा रहमतुल्लाह अलैह के मदफ़न के बारे में तज़किरा निगार मुख़तलिफ़ राय रखते हैं मगर अक्सर का बयान है कि उनका मज़ार कोल्हवाबन ही में है। (मुआरिफ़ शारेह बुख़ारी सफ़ा 77 से 79, नाशिर रज़ा एकेडमी)

आपने अपनी पूरी उम्रे पाक तजरीद व तफ़रीद के साथ गुज़ारी। तज़किरा निगारों के मुख़तलिफ़ मक़ालों को देखकर लगता है कि आप भी तवीलुल उम्र बुर्जुग गुज़रे हैं। एक अन्दाज़े के मुताबिक़ आपका विसाल पुर मलाल नवीं सदी हिजरी के आख़िरी दौर में हुआ। तहक़ीक़ात का सिलसिला बिहम्दिही तआला व बिऔने हबीबिहिल आला जारी व सारी है। इंशा अल्लाह अनक़रीब आपकी ज़ाते वाला सिफ़ात से मुतअल्लिक़ मज़ीद तहक़ीक़ी मालूमात आप तक पहुँचाई जायेंगी।

अख़ीर में बड़े अफ़सोस के साथ अर्ज़ करना पड़ रहा है कि हज़रत फ़ाज़िले गिरामी अल्लामा मुहम्मद आसिम आज़मी जैसे इल्म दोस्त शख़्स से "मुआरिफ़ शारेह बुख़ारी" में अपने शामिल शुदा मज़मून "शारेह बुख़ारी के क़स्बा घोसी का एक तारीख़ी जायज़ा" के अन्दर हज़रत सैयदी सैयद अहमद बादया पा को मदारे पाक के मख़सूस रूफ़क़ा में तहरीर फ़रमाकर खुद अपनी ही बात को क़दरे हलका कर दिया क्योंकि अव्वलन तो आपने जिस अन्दाज़ में हज़रत सैयद अहमद बादया पा और सत्तर हमराहियों का तअल्लुक हुज़ूर मदारे पाक के साथ बयान किया है और यह कि बिशुमूल हज़रत सैयद अहमद बादपा वह सत्तर हमराही कि जिन जिन के मुक़ामे विलायत का तअय्युन हुज़ूर मदारे पाक ने अपनी ज़ाहिरी हयाते मुबारका में ही कर दिया था और वह सब बिशुमूल हज़रत सैयद अहमद बादपा बादे विसाल मदारे पाक अपने अपने मुक़ामाते विलायत पर जाकर मसरूफ़े रुश्द व हिदायत हो गये। इस बयान का अन्दाज़ इस बात को बख़ूबी ज़ाहिर कर रहा है कि हज़रत सैयद अहमद बादया पा हुज़ूर मदारे पाक के मोतमद अलैह ख़लीफ़ा थे और बक़िया सत्तर हज़रात भी हुज़ूर कुत्बे वहदत सैयदना ज़िन्दा शाह मदार क़द्दसा सिर्रहू के ख़लीफ़ा थे जिन्हें आपने सिर्फ़ "हमराही" लिखा है जबकि हम गुज़िश्ता सतरों में हज़रत फ़ाज़िले गिरामी अल्लामा डाक्टर मुहम्मद आसिम आज़मी साहब की ही किताब "तज़किरा मशाइख़े एज़ाम" से भी यह बात साबित कर चुके हैं कि हुज़ूर सैयदी अहमद बादपा सैयदना मदारूल आलमीन क़द्दसा सिर्रहू के नामवर खुलफ़ा में सरे फेहरिस्त हैं। बेहतर होगा अगर डाक्टर साहजब रूफ़क़ा को खुलफ़ा से बदल दें। हम ने यह चन्द सतरें मौसूफ़ की वसीउन्नज़री के पेशे नज़र लिख दी हैं वरना आमतौर पर तो आजकल लोगों का यह मिज़ाज बन चुका है कि अपनी बात को ही हर्फ़े आख़िर समझ लेते हैं मगर हमारे ख़याल के मुताबिक मौसूफ ऐसे ज़हन व फ़िक्र के आदमी नहीं है। फ़ाज़िल मौसूफ़ का बहरहाल फिर मैं तहे दिल से शुक्रगुज़ार हूँ कि आपने बड़े एहतियात और हक़ बयानी के साथ काम लिया है नीज़ आपकी और भी दूसरी तहरीरें सिलसिलए मदारिया और हुज़ूर मदारे पाक के तअल्लुक़ से पढ़ने को मिलीं। अल्हम्दु लिल्लाह मौसूफ़ का अन्दाज़े बयान बहुत बेहतर और मोहतात है। दुआ है कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फ़ाज़िल मौसूफ़ को मज़ीद ख़िदमतें करने की तौफ़ीक़ बख़शे और बिलखुसूस हुज़ूर मदारे पाक का ज़िक्रे ख़ैर करने के सदक़े में अपनी बारगाह के अज़ीम इनआमात से मालामाल व साहिबे फ़ज़्ल व कमाल फ़रमाये। आमीन।।

●●

तमाम बड़ी गलतियों की जड़ में तकब्बुर ही होता है।

मुख़्तसर सवानेह
(हज़रत सैय्यदना सैय्यद बदीअ उद्दीन कुत्बुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ियउलमौला तआला अन्हु)

आपका अस्ली नाम

सरगिरोहे ख़ानवादए तैफूरिया मसदरे सिलसिलए मदारिया हज़रत ज़िन्दा शाह मदार क़ुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नामे नामी इस्में गिरामी सैय्यद अहमद बदीअ उद्दीन है। कुन्नियत अबू तुराब है। बाज़ मुमालिक में अहमद जिन्दान सूफ के नाम से मशहूर हैं। अहले तसव्वुफ़ और अहले मारफ़त व हक़ीक़त आपको अब्दुल्लाह, कुत्बुल अक़ताब, कुत्बुल मदार, फ़रदुल अफ़राद कहते हैं। मदारे आलम, मदारे दोजहाँ, मदारूल आलमीन, शम्सुल अफ़लाक आपके अलक़ाबे मुक़द्दसा हैं। बर्रे सग़ीर हिन्द व पाक में ज़िन्दा शाह मदार और ज़िन्दा वली के नाम से ज़्यादा शोहरत हासिल है।

विलादत बासआदत :

आपकी विलादत बासआदत सुब्ह सादिक़ के वक़्त पीर के दिन यकुम शव्वालुल मुकर्रम 242 हिजरी मुताबिक 856ई. में मुल्के शाम के शहर हलब में मुहल्ला ''जुनार'' में हुई। साहिबे आलम से सने विलादत की तारीख़ निकलती है। वालिद माजिद का नामे नामी सैय्यद कुदवतुद्दीन अली हलबी है और वालिदा मोहतरमा सैय्यदा फातमा सानिया उर्फ़ बीबी हाजरा के नाम से मशहूर हैं।

आप हसनी हुसैनी सैय्यद हैं :

हज़रत सैय्यदना कुतुबुल मदार बदीअ उद्दीन जिन्दा शाह मदार रजियल्लाहु तआला अन्हु अपना हसब व नसब खुद इन अलफ़ाज़ में बयान फ़रमाते हैं (तर्जुमा) ''मैं हल्ब का रहने वाला हूँ। मेरा नाम बदीअ उद्दीन और बाप की तरफ़ से हुसैनी सैय्यद हूँ। मेरे नानाए मोहतरम मुस्तफ़ा जाने आलम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम हैं जिनकी तारीफ़ व सताइश दोजहाँ में की जाती है।'' (अलकवाबिदुद्दरारिया)

हज़रत क़ाज़ी हमीद नागौरी क़द्दसा सिर्रहुल क़वी ने अपने मलफ़ूज़ात में आपका शजरए नसब इस तरह नक़्ल किया है (तर्जुमा) '०-यानी, हज़रत कुत्बुल मदार हज़रत मौला अली इब्ने अबी तालिब कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम की औलाद में से बहुत बड़ी हसती के मालिक हैं। आपके वालिद माजिद का इस्मे गिरामी (मऊ) नसबी शजरे के) यह है, सैय्यद अली हलबी इबने बहा उद्दीन इब्ने सैय्यद ज़हीर उद्दीन इब्ने सैय्यद अहमद इब्ने सैय्यद मुहम्मद इब्ने सैय्यद इसमाईल इब्ने इमामुल अइम्मा सैय्यद जाफ़र सादिक़ इबने इमामुल इस्लाम सैय्यद मुहम्मद बाक़र इब्ने इमामुद्दारैन इमाम ज़ैनुल आबिदीन इब्ने इमामुश्शोहदा इमाम हुसैन इब्ने इमामुल औलिया हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम रज़ियल्लाहु तआला अनहुम अजमईन।

वालिदा माजिदा की तरफ़ से आपका नसबनामा यह है : (तर्जुमा) वालिदा माजिदा का नामे नामी फ़ातमा सानिया उर्फ़ हाजिरा तबरेज़ी दुख़्तर सैय्यद अब्दुल्लाह इब्ने सैय्यद ज़ाहिद इब्ने सैय्यद अबू मुहम्मद इब्ने सैय्यद अबू सालेह इब्ने सैय्यद अबू यूसुफ इब्ने सैय्यद अबुल क़ासिम इब्ने सैय्यद अब्दुल्लाह महज़ इब्ने हज़रत सैय्यद हसन मुसन्ना इब्ने इमामुल आलमीन हज़रत इमाम हसन इब्ने अमीरूल मोमिनीन हजरत अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।

रिसाला मौलाना अब्दुल बासित कन्नौजी में आपका हसब नसब इसी तरह दर्ज है,

नादान माल को ढूँढता है और अक्लमन्द कमाल को।

मालूम हुआ कि हज़रत की कुन्नियत अबू तुराब है लक़ब शाह मदार है नाम सैय्यद बदीअ उद्दीन है वालिदा माजिदा की तरफ़ से हसनी। मख़दूम क़ाज़ी हमीद उद्दीन नागौरी के मकतूबात से यह सही नसबनामा दर्ज किया गया है यानी सैय्यद बदीअ उद्दीन इब्ने सैय्यद अली हलबी इब्ने सैय्यद बहा उद्दीन..अल्ख़। आपका वतन हल्ब है तारीख़े विलादत यकुम शव्वाल वक़्त फ़ज्र रोज़े दोशम्बा तीसरी सदी हिजरी है। आपकी हयाते तैय्यबा पांच सौ छयानवे साल की है। मिरअतुल अनसाब में भी आपका सिलसिलए नसब इसी तरह दर्ज है, यानी हज़रत सैय्यद बदीअ उद्दीन कुत्बुल मदार सैय्यद अली सैय्यद बहा उद्दीन सैय्यद ज़हीर उद्दीन सैय्यद इस्माईल सानी सैय्यद मुहम्मद अहमद सैय्यद इस्माईल अव्वल सैय्यदना जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। (मिरअतुल अनसाब सफा 156-157)

वाज़ेह हो कि सैय्यद इस्माईल सानी का नाम सैय्यद मुहम्मद और उनके वालिदे गिरामी है। इस शजरे में मुसन्निफ़ ने सहवन सैय्यद मुहम्मद के बाद लफ़्ज़ अहमद का इज़ाफा कर दिया है। सैय्यद अहमद इस्माईल सानी लिखना चाहिए था।

हज़रत ख़िज़्र अला नबीयेना व अलैहिस्सलात वस्सलाम की ताईद :

हज़रत ख़िज़्र पैग़म्बर अला नबीयेना व अलैहिस्सलात वस्सलाम अपनी एक मुलाक़ात में हज़रत कुत्बुल मदार सैय्यद बदीअ उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मदारियत की बशारत देते हुए इस तरह फ़रमाते हैं, (तर्जुमा) ''ऐ साहबज़ादे ! बिला शुब्हा तुम्हारी अस्ल मुहम्मदी है, मिट्टी फ़ातमी है नस्ल अलवी है और पैदाइश हल्ब की है। अनक़रीब अल्लाह तआला तुमको करामतों का मदार और अलामतों का महवर बनायेगा।''

हज़रत अल्लामा अहमद अरब बिन मुहम्मद क़ानी हज़रत कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के आली नसब की तर्जुमानी एक मनक़बत में इस तरह करते हैं, (तर्जुमा) यानी, हज़रत ज़िन्दा शाह मदार नाम और कुन्नियत में अपने दादा हज़रत अली के मशाबह हैं जिनकी मिदहत अबूतुराब से की जाती है।

(तर्जुमा) यानी, आप वह सैय्यद इब्ने सैय्यद हैं जिनसे ज़िन्दगी में इतरपाशियां होती हैं। (अलकवाकिबुद्दुरारिया)

पैदाइश के वक़्त करामात का ज़हूर :

आप जब शिकमे मादर से इस जहाने तीरा व तार में जलवाबार हुए तो रुए अनवर की ताबानी से वह मकान जगमगा उठा जिसमें आप पैदा हुए। पैदा होते ही जबीने नियाज़ को ख़ालिक़े बेनियाज़ की बारगाहे नाज़ में वहरे सज्दा झुका दिया। ज़बाने हक़ नवा से यह सदा बुलन्द हुई, ''ला इलाहा इल लल लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह'' (तर्जुमा अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

हज़रत इदरीस हल्बी जो एक साहिबे कश्फ़ व करामत बुर्जुग हैं रिवायत फ़रमाते हैं कि आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जब इस आलमे गीती को अपने कुदूमे मैमनत लुज़ूम से मुशर्रफ़ फ़रमाया तो रूहे पाक साहिबे लौलाक हज़रत मुम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मअ जुमला असहाबे किबार व अइम्मए अतहार ख़ानए अली हलबी में जलवा अफ़रोज़ हुई और सैय्यद अली हलबी व फ़ातमा सानिया को सईद बेटे की विलादत की मुबारकबाद दी।

ग़ैब से हातिफ़ ने हाज़ा वली अल्लाह, हाज़ा वली अल्लाह का मुज़दा सुनाया। शाहिदाने बारगाहे लमयज़ाल ने अपने लौहे दिल पर इन मुबश्शिरात को नक़्श कर लिया और आप सईदे अज़ली क़रार दिये गये।

तालीम व तरबियत :

अल्लाह तआला जिसको अपना बरगुज़ीदा बनाता है और अवपनी महबूबियत के लिए इन्तख़ाब फ़रमाता है उसकी तालीम व तरबियत के लिए भी बेनज़ीर और

जिसकी तौबा अमल के मुताबिक हो वो तौबा कुबूल है।

बेहतरीन इन्तिज़ाम फ़रमाता है चुनान्चे आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की उम्रे मुबारक चार साल चार महीने चार दिन की हुई तो सलफ़े सालिहीन की सुन्नत के मुताबिक़ वालिदे गिरामी ने बमंशाए रहमानी आपको रस्मे बिस्मिल्लाह ख़्वानी के लिए कुत्बे रब्बानी शैख़े वक़्त हज़रत हुज़ैफ़ा मरअशी शामी मुतवफ़्फ़ी 276हिजरी की ख़िदमत में पेश कर दिया। उस्तादे मोहतरम ने उस्ताज़ी का हक़ अदा किया। इब्तिदाई तालीम से लेकर शरीअत के तमाम उलूम व फुनून से आरास्ता व पैरास्ता कर दिया। जब आपकी उम्रे मुबारक 14 साल की हुई तो उलूमे अक़लिया व नक़लिया में आपको महारते ताम्मा हासिल हो चुकी थी। हाफ़िज़े कुरआन मजीद होने के साथ-साथ आप तमाम आस्मानी किताबों खुसूसन तौरेत, इंजील व जुबूर के भी हाफ़िज़ व आलिम थे। (तज़किरतुल किराम तारीख़ खुलफ़ाए अरब व इस्लाम सफा 493)

हज़रत मख़दूम अशरफ़ जहाँगीर समनानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि बाज़ उलूमे नौ और मसलन इल्मे हीमिया, सीमिया, कीमिया और रीमिया में कामिल दस्तरस रखते थे। (लताइफ़े अशरफ़ी फ़ारसी...स. 354 मतबूआ नुसरतुल मताबेअ दिल्ली)

बैअत व ख़िलाफ़त :

ज़ाहिरी उलूम से फ़राग़त के बाद सआदते अज़लिया ने जज़्बे दरूँ को इल्मे बातिन के हुसूल के लिए पा ब इश्तियाक़ कर दिया। जज़्बए शौक़ ने ज़ियारते हरमैन शरीफ़ैन के लिए क़दम बढ़ाया। वालिदैन करीमैन से इजाज़त तलब की और आज़िमे मक्का व मदीना हो गए। जब वतन से बाहर निकले तो मंशाए कुदरत ने हरीमे दिल से सदा दी कि ऐ बदीअ उद्दीन ! सेहने बैतुल मुक़द्दस में तुम्हारी मुरादों की कलीद लिए सरगिरोहे ओलिया बायज़ीद बुस्तामी सरापा इन्तिज़ार हैं। आपने अज़्म के रहवार को बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ मोड़ दिया। 259 हिजरी सुलतानुल औलिया हज़रत बायज़ीद बुस्तामी उर्फ़ तैफूर शामी क़द्दसा सिर्रहुस्सामी ने सेहने बैतुल मुक़द्दस में निस्बते सिद्दीक़िया तैफूरिया व बसरिया तैफूरिया से सरफ़राज़ फ़रमाया और इजाज़त व ख़िलाफ़त का ताज सर पर रखकर हुल्लए बातिन से आरास्ता व पैरास्ता फ़रमाया।

असरए दराज़ तक मुरशिदे बरहक़ की मईयत में रहकर इरफ़ान की नेमतों से मुस्तफ़ीज़ व मुस्तफ़ीद होते रहे। ज़िक्र व अशग़ाल और औराद व वज़ायफ़ और रियाज़ात व मुजाहिदात के ज़रिये तरीक़त व हक़ीक़त और सूलूक की मंज़िलों और मारफ़त के असरार व रूमूज़ के मुक़ामात को तै करते रहे। मुरशिदे बरहक़ ने ज़िक्रे दवाम और हब्से दम की भी तामलीम फ़रमाई।

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रज़ियल्लाहु अन्हु का इन्तिकाल :

मुरशिदे बरहक़ ने मुरीदे सादिक़ को इरफ़ाने हक़ और मुशाहिदाते हक़ीक़त का ऐसा लतीफ़ एहसास और सलीम जज़्बा अता फ़रमाया कि आप मुशाहिदए ज़ाते इलाहिया और दर्के सिफ़ाते लामुतनाहिया में महव व मुस्तग़रक़ रहने लगे। 261 हिज़री का सूरज अपने आठवें बुर्ज में क़दम रख चुका था। चौदहवीं रात का चाँद अपनी पुरशबाब चाँदनी से जबीने कायनात को मुनव्वर व मुजल्ला कर चुका था। दायीए अजल ने हज़रत सुलतानुल आरिफ़ीन बायज़ीद बुस्तामी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दरे ज़ीस्त पर स्तक दी और आलमे कुर्बे अक़रब में हुज़ूरी का दावतनामा पेश कर दिया। यकुम शाबानुल मुअज़्ज़म 261 हिजरी मुताबिक़ 875 ई. में इस दारेफ़ानीसे आलमे बाला की तरफ़ कूच कर गये। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

हज़्जे बैतुल्लाह व बारगाहे रिसालत में हाज़िरी :

मुरशिद से जुदाई के बाद हज़रत ज़िन्दा शाह मदार क़द्दसा सिर्रहू अपने हासिले मुराद माबूदे हक़ीक़ी की याद से हरीमे दिल को आबाद करने लगे और एक मख़सूस मुक़ाम पर ज़िक्रे जानो जानाँ में मुस्तग़रक़ हो गए। आपने ऐसी गोशा नशीना इख़्तियार फ़रमाई कि दुनिया की तमाम चीज़ों से क़ल्बे पाक मुअर्रा हो गया। आपका बातिन ख़ाली और

मुसफ़्फ़ा हो गया और दुनिया व आख़िरत से मुजर्रद हो गए। तजल्लियाते रब्बानिया की हमराही और मुशाहिदाते हक्कानिया की हम नवाई में एक तवील अर्सा गुज़र गया। एक रात वारफ़तगीए शौक़ के आलम में थोड़ी देर के लिए आँखों के दरीचे बन्द हुए थे कि ख़्वाब में मुस्तफ़ा जाने आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की शबीहे मुबारक जलवा अफ़रोज़ हुई और एक शीरीं आवाज़ कानों में गूँज उठी कि बदीअ उद्दीन! तेरी मुरादों के हुसूल का वक़्त क़रीब आ गया है। गुम्बदे ख़ज़रा के मकीन तेरे नाना जान सुहरी जालियों से तेरी राह देख रहे हैं। आँख खुली तो दिल की दुनिया में मुसर्रतों का तूफ़ान बरपा था। वारफ़तगीए शौक़ एहसासो विजदान पे छाती चली गई लेकिन ख़िरद ने सरगोशी की कि ऐ शौक़ मचल, ऐ पॉव, ठहर। एक दिल की तमन्ना ख़ूब-ख़ूब तड़प। आपने रहवारे शौक़ को ख़ानए काबा की तरफ़ मोड दिया। मौसमे हज शुरू हो चुका था। फ़रीज़ए हज व ज़ियारत अदा किया। जब जमाले इलाही की तजल्लियों के फ़रोग़ से क़ल्बे दरूँ कुन्दन हो गया तो दिले बेताब पर मदीना मुनव्वरा के एहसासात छाते चले गए। वह सरज़मीन जिसके नाम को सुनकर अहले ईमान की धड़कनें तेज़ हो जाती हैं। वह नूरानी गलियाँ जिनमें जारूबकशी के लिए आंखें और पलकें आरज़ूमन्द रहती हैं। मस्जिदे नबवी के वह मुअत्तर व मुनक़्क़श सुतून जिन्हें तसवीरों में देखकर ही एहसास व विजदान सजदारेज़ हो जाते हैं। वह गुम्बदे ख़ज़रा जिसमें से नूर की शुआएं फूट फूट कर सारी कायनात को रौशन करती हैं। अब वहाँ की हुज़ूरी, रसाई और बारयाबी की धुन में पाए शौक़ वारफ़्ता व तुन्दरौ होता जा रहा है। जूँ जूँ मंज़िल करीब आ रही है दिलो दिमाग़ और रूह की तमाम हिस्सियात पर अदब व एहतेराम का रंग ग़ालिब होता जा रहा है। मुकद्दर की बारयाबी से दरे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम पे हुज़ूरी होती है। यह अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का आस्ताना है। यहाँ ख़िलकत का हुजूम रहता है। यहाँ तो शहंशाह भी गदा बनकर आते हैं। यह मुक़ाम तो फ़हमो इदराक की मंज़िल से भी बालातर है। यहाँ शर्मसारी के दिलों में उम्मीदों का दिया जलता है। इज़्तिराब के पसे परदा चैन व सुकून की हवा चलती है। वह इधर दायीं हाथ को मिम्बरे नुबूवत है और वह रियाज़ुल जन्नत। यहाँ क़दम-क़दम पर अनवारो रहमत सजदारेज़ हैं। नूरो नकहत की ज़मीन पर चाँद, सूरज और सितारे दस्तबस्ता नूर की ख़ैरात के लिए खड़े हैं। दिन या रात की किसी घड़ी में एक पल के लिए भी यह जगह ख़ाली नहीं रहती। दजीवाने और मस्ताने यहाँ धूनी रमाए रहते हैं। बयक वक़्त सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दरूदो सलाम के नग़्मों के साथ यहाँ चक्कर लगाते रहते हैं। अहले मुहब्बत का यहाँ हरदम हुजूम रहता है। अल्लाह हू की बाज़गश्त फ़ज़ा को गरमाए रहती है। यहाँ का एक सजदा हज़ारों सजदों पर भारी होता है।

हज़रत कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु बारगाहे रिसालत में बारयाब है दिल की बेताबी को क़रार मिल रहा है। इज़्तिराबे शौक़ पर हुसूले तमन्ना की उम्मीदों का ग़लबा हो रहा है। एहसासात पर सुकून की खुनकी छाई हुई है। रात अपने आख़िरी मराहिल में दाख़िल हो चुकी है। फ़ज्रे सादिक़ अपने उजाले को कायनात पर बिखेरने की तैयारी कर रहा है कि इसी असना में रहमतों नूर के पैग़ाम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी नूरानियत के साथ आलमे मिसाल में ज़ाहिर होते हैं और अपने दिलबन्द बदीअ उद्दीन कुत्बुल मदार को अपने दामने रहमत में ढांप लेते हैं। क़तरा समन्दर से मिलकर समन्दर होने जा रहा है। ज़र्रा आफ़ताब बन रहा है। मअन अमीरे कबीर हज़रत मौला अली कर्मल्लाहु वजहहुल करीम अयाँ होते हैं। बारगाहे रिसालत से हुक्म जारी होता है, ऐ अली! अपने नूरे नज़र को रूहानियत की तरबियत देकर और रूज्ले कामिल बनाकर मेरे पास लाओ।

निस्बते उवैसिया से मुशर्रफ होना :

ताजदारे अक़लीमे विलायत ने आपको अपने आग़ोगेश आतिफ़त में लेकर आपकी रूहानियत को सैक़ल फ़रमाया और क़ल्ब को मुतहम्मिले बारे विलायते उज़मा

हमें उर्स व फातहा उनके लिए करते हैं जिन पर अल्लाह का इनाम है।

बनाकर बारगाहे रिसालत में पेश कर दिया। रसूले कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने दोबारा मिशगूल अवातिफ़ फ़रमाकर ख़ानए नुबूवत में इस्लामे हक़ीक़ी की तलक़ीम फ़रमाई और अपने जमाले जहाँआरा से आपके क़ल्बो रूह को मुज़य्यिन फ़रमाकर उवैसियत से मुमताज़ फ़रमाया और हिन्दुस्तान जाने की ताकीद फ़रमाई।

उवैसियत का मतलब :

क़ारिईन! उवैसियत क्या है ? और इसकी शान कितनी निराली है ? इसके फ़हमो इदराक के लिए शाहे सिमनानहज़रत मख़दूम अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी क़द्दसा सिर्रहुन्नूरानी की बारगाह में थोड़ी देर के लिए हाज़िरी देते हैं, आप फ़रमाते हैं कि,

(तर्जुमा) "शैख़ फ़रीद उद्दीन अत्तार क़द्दसा सिर्रहू बयान फ़रमाते हैं कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के वलियों में से कुछ हज़रात वह है जिन्हें बुर्जुगाने दीन मशायख़े तरीक़त "उवैसी" कहते हैं कि उन हज़रात को ज़ाहिर में किसी पीर की ज़रूरत नहीं होती क्योंकि हज़रत रिसालत पनाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम अपने हुज़रए इनायत में बज़ाते खुद उनकी तरबियत व परवरिश फ़रमाते हैं। इनमें किसी ग़ैर का कोई वास्ता नहीं होता है जैसा कि आप सल्ललल्हु अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत उवैस करनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तरबियत दी थी। यह मुक़ामे उवैसियत निहायत ही ऊँचा रौशन और अज़ीम मुक़ाम है। किसकी यहाँ तक रसाई होती है ? और यह दौलत किसे मयस्सर होती है ? बमोजिब आयते करीमा यह अल्लाह तआला का मख़सूस फ़ज़्ल है वह जिसे चाहता है अता फ़रमा देता है और अल्लाह तआला अज़ीम फ़ज़्ल वाला है।"

मज़ीद फ़रमाते हैं,

"हज़रत शैख़ बदीअ उद्दीन मुलक़्क़ब ब शाह मदार क़द्दसा सिर्रहू भी उवैसी हुए हैं निहायत ही बुलन्द मरतबा व मशरब वाले हैं। बाज़ नवादिर उलूम जैसे हीमिया, सीमिया, कीमिया, रीमिया उनसे मुशाहिदे में आए जो इस गिरोहे औलिया में नादिर ही किसी को हासिल होता है।"

ऐसा ही "मिरअतुल असरार" के सफ़ा नम्बर 1007 पर दर्ज है।

फ़ैज़े उवैसिया मदारिया का इजरा :

हज़रत कुत्बुल मदार, रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बारगाहे क़ासिमे नेमात सल्लल्लाहु अलैहि व आहिली वसल्लम से जो मख़सूस नेमते उवैसियत तफ़वीज़ की गई आपने उस फ़ैज़ान को सिर्फ़ अपनी ज़ात के लिए मुख़तस नहीं फ़रमाया बल्कि जूदो सख़ा और करम व अता से काम लेते हुए आपने इस फ़ैज़ को दूसरों में भी तक़सीम फ़रमाया चुनान्चे आपके एक मुरीदो ख़लीफ़ा हज़रत महमूद कन्तूरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक मरतबा अर्ज़ किया कि हुज़ूर ! अपना सिलसिला मुझे अता फ़रमायें। करीम इब्ने करीम ने नवाज़िश का दरिया बहा दिया, इरशाद फ़रमाया,

"अपना नाम लिखो फिर मेरा नाम रक़म करो और फिर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का इस्मे गिरामी नक़्श कर लो और सिलसिलए उवैसिया मदारिया से मुस्तफ़ीज़ हो जाओ।"

बन्दए इश्क़ शुदी तर्के नसब कुन जामी कि दरीं राहे फ़लाँ इब्ने फ़लाँ चीज़े नीस्त जमाले औलिया कोड़ा जहानाबादी का निस्बते

उवैसिया से मुस्तफ़ीज़ होना :

इकरामो नवाज़िश का यह सिलसिला यहीं पर ख़त्म नहीं हो जाता बल्कि विसाल के बाद भी साहिबाने ज़र्फ़ व क़ल्ब को आप शरफ़े उवैसियत से नवाज़ते रहे हैं चुनान्चे वक़्त के वलीए कामिल सिलसिलए बरकातिया रज़विया के उन्तीसवीं इमाम शैख़े तरीक़त हज़रत मुहम्मद जमाल उद्दीन उर्फ़ जमाले औलिया रहमतुल्लाह तआला अलैह ने भी बिला वास्ता आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़ैज़े उवैसिया हासिल फ़रमाया। (तज़किरतुल मशाइख़े रज़विया सफ़ा 310 मुजतबा रज़वी)

बारगाहे नुबूवत से हिज्र व जुदाई का एहसास :

उवैसियत की तफ़सील जानने के बाद एक मरतबा फिर बारगाहे रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम में हाज़िरी दीजिए और तारीख़ का पिछला वरक़ उलटकर देखिये। कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुरादों की झोली भर चुके हैं। मुक़द्दर की सरफ़राज़ी को क़माले मेराज हासिल हो चुका है। शमए शबिस्ताने मुस्तफ़ाई से जिस्मो तन के साथ-साथ जहाने क़ल्बो रूह भी रौशन हो चुका है लेकिन शहरे नबी को छोड़कर हिन्दुस्तान जाने का इशारा ख़िरमने विसाल पर हिज्र की बिजलियाँ कौंदने वाली हैं। आशिक़े मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम जिसके दिल में यह सदा गूंजती हो -

''तेरी गली को छोड़कर बाग़े जिनाँ में जाए कौन ?''

दिले मुज़तर जुदाई की ख़बर सुनकर तड़प तड़प कर किस कदर बेचैन हुआ होगा। अहले दिल ही इसे महसूस कर सकते हैं। लब ख़ामोश हैं। आंखें खुली हुई हैं। ज़बान कुछ कहना चाहती है लेकिन कुव्वते गोयाई पर पासे अदब की हुक्मरानी है। एहसासे जुदाई में आंखों से अश्क उबलना चाहते हैं मगर अदब ने आंसू रोक दिये हैं -

लहू-लहू है जिगर आंख तर नहीं होती'' यह सोचकर फ़ुग़ाँ गले में रूक गई कि शायद हुज़ूर के नाज़ुक गोशे मुबारक ताबे फ़ुग़ाँ न उठा सकें। जज़्बए इश्क़, मदीना से जुदाई के लिए क़तई तैयार नहीं है लेकिन अक़्ले सलीम कानों में सरगोशी करती है, आने वाले को तो जाना ही होता है, अल्लाहो अकबर ! इतनी लम्बी ज़िन्दगी और इतना कम पड़ाव ..... दिल गिरफ़ता होते हैं ..... शौक़ तसल्ली देता है, जनाबे आली ! आप घबराए नहीं, कुल्लु शै यरजउ इला असलिही फिर दरे हुज़ूर पर हुज़ूरी का शरफ़ मिलेगा। आप अलविदायी सलाम अर्ज़ करते हैं,

ऐ नूरी क़बा वाले ! अस्सलातो वस्सलाम ऐ गुम्बदे ख़ज़रा के मकीं मुक़द्दस ! अस्सलातो वस्सलाम एक मदीने के मदीने के ताजदार! अस्सलातो वस्सलाम ऐ रहमते कायनात! अस्सलातो वस्सलाम

सफ़रे हिन्दुस्तान :

सरज़मीने हिन्द जिसके लालाज़ारों और गुलिलस्तानों से फूटी हुई ईमान व यक़ीन की गुलिस्तानों से फूटी हुई ईमान व यक़ीन की खुशबू बारगाहे रिसालत में महसूस की जाती है और हरीमे नुबूवत से अहले जहाँ को यह बशारत दी जाती है कि ''हिन्दुस्तान से ईमान की खुशबू आ रही है'' ईमान की इस खुशबू से अहले हिन्द के दिलों दिमाग़ को मुअत्तर करने वाले का अब इन्तिख़ाब हो चुका है। कुफ़्रो ज़लालत के अंधेरे में ईमान व हिदायत की तजल्लियाँ बांटने के लिए हादीए आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने एक नूरे नज़र को मज़हरे सिराजे मुनीर बनाकर हिंदुस्तान रवाना हो जाने का हुक्म सादिर फ़रमा दिया है। मुबल्लिग़ को तबलीग़ी सलाहियतों से मुसल्लह कर दिया गया है। हज़रत कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बानीए इस्लाम के नक़ीब बनकर आज़िमे हिन्द हो रहे है। समन्दरी सफ़र दरपेक्ष है। हिन्दुस्तान आने वाला जहाज़ साहिले अरब पर तैयार खड़ा है। कूच का नक़्क़ारा बजने वाला है। लोग अपने अपने ज़ादे सफ़र के साथ अपनी-अपनी नशिस्तगाहों पर बैठ चुके हैं। नाखुदा बार बार साहिल की तरफ़ निगाहें डाल रहा है कि कोई हिन्द का मुसाफ़िर छूट न जाए। हज़रत कुत्बुल मदार ऐन वक़्त पर वहाँ पहुँचते हैं और मुसाफ़िरों की फ़ेहरिस्त में एक फ़र्द का और इज़ाफ़ा कर लिया जाता है। मल्लाह लंगर उठाते हैं और जहाज़ जानिबे मंज़िल रवाँ होता है। ऐन वस्त समन्दर में तौहीद का मुबल्लिग़ आलाए कलेमतुल हक़ के लिए लोगों के दरमियान खड़ा होता है और तौहीद व

कुरआन में अलहम्दो की सूरत का नाम ही फातेहा रखा है।

रिसालत का पैग़ाम उन्हें सुनाता है :

"ऐ लोगो ! इबादत के लायक़ तो सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह है। वह एक है। उसकी ज़ात व सिफ़ात में कोई उसका साझी और शरीक नहीं है और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं।"

जब यह सदाए तौहीद अहले जहाज़ के कानों में पहुँची तो उनकी शक़ावतों ने कुबूले हक़ से इंकार करने पर उन्हें मजबूर कर दिया और उनके वीरान कुलूब और मुर्दा रूहें अनवारे इस्लाम से मामूर न हो सकीं। ग़ज़बे इलाही को जोश आया और जहाज़ तूफ़ान की ज़द में आकर ग़रक़ाब हो गया। आपके सिवा जहाज़ पर सवार सभी मुसाफ़िर व मल्लाह भी समन्दरों की मौजों में दफ़्न हो गये। कुदरते खुदावन्दी से शिकस्ता व ग़रक़ाब जहाज़ का एक तख़्ता बरआमद हुआ। अल्लाह की हिफ़ाज़त में उस तख़्ते के सहारे समन्दर में पैरले लगे, उसी हालत में कुछ अय्याम गुज़र गये। भूख व प्यास से निढाल हो गये। जिस्मे मुबारक का पैराहन जूलीदा हो गया। आपने बारगाहे इलाही में दिल से यह दुआ की, ऐ अल्लाह जल्ला व शानहू ! ऐसा कर दे कि मुझे भूख न लगे और मेरा लिबास मैला व पुराना न हो।

दुआ इजाबत से टकराती है। कुबूलियत अपने आग़ोश में लेती है। सूबा गुजरात के बन्दर खम्बात के साहिल पर आप आकर लगते हैं। बारगाहे बेनियाज़ में जबीने नियाज़ रखकर शुक्राना अदा करते हैं।

मुक़ामे सदीयत पर फायज़ होना :

आपने सजदे से सर उठाया तो कानों से एक सदा टकराई, सैय्यद बदीअ उद्दीन इधर आइये, आपका इन्तिज़ार हो रहा है। आपने अपनी निगाहों को हर तरफ़ दौड़ाया, कोई मनादी नज़र नहीं आया, मअन वही सदा दोबारा कानों से टकराई, फिर आपने गिरदो पेश का मुतालआ फ़रमाया, तीसरी मरतबा वही सदा बुलन्द हुई, आपने इरशाद फ़रमाया, इस वीराने में कौन है जो मेरे नाम से वाक़िफ़ है ? मलायके उन्सुरी का सरदार शतीख़रा एक हसीन पैकर में ज़ाहिर हुआ, एक रिवायत में है कि अब्दाले सहराई ज़ाहिर हुआ और एक रिवायत में है कि हज़रत ख़िज़्र अला नबीयेना व अलैहिस्सलाम रूनुमा हुए और फ़रमाया कि साहबज़ादे ! आलमे अलवी व सिफ़ली में आपके नाम का एलान कर दिया गया है। सब आपको जानते हैं, आप मेरे साथ आइये। आप उनके साथ एक बाग़ में तशरीफ़ ले गये। देखते हैं कि उस बाग़ में एक निहायत ही ख़ूबसूरत और आलीशान मकान है। मकान में सात दरवाज़े हैं और हर दरवाज़े पर एक पैकरे जमील निगहबानी के लिए मुक़र्रर है। आप दरवाज़े उबूर करते गए और तहनियत व मरहबा और मुबारकबादियां हासिल करते गए। जब हवेली के अन्दर तशरीफ़ ले गए तो देखा कि एक बहुत ही अज़ीमुश्शान ख़ूबसूरत तख़्त बिछा हुआ है और ताजदारे कायनात फ़ख़्रे मौजूदात सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम मअ असहाब किबार के जलवा अफ़रोज़ हैं। मुक़द्दर को सरफ़राज़ी मिली। हुज़ूरी में शरफ़े बारयाबी हासिल हुआ। रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने बकमाले शफ़क़त आग़ोशे आतफ़त में बिठाया। इसी असना में एक शख़्स एक ख़्वान में तआमे मलकूती और बिहिश्ती हुल्ला लेकर ज़ाहिर हुआ। क़ासिमे नेमात सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने दस्ते मुबारक से 9 लुक़मे आपको खिलाये जिसके सबब तमाम तबक़ाते अर्ज़ी व समावी आप पर रोशन हो गये। इरशाद हुआ कि अब तुमको खाने पीने की ज़रूरत न होगी और जन्नती हुल्ला पहनाकर बशारत दी कि अब यह कभी मैला, पुराना और जूलीदा न होगा और इसको धोने और साफ़ करने की हाजत दरपेश न होगी।

रूख़े रोशन ताबनाक हो गया :

और नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही

सूरः फातेहा नमाज की हर रकात में पढ़ना वाजिब है।

वसल्लम ने आपके चेहरे पर अपना दस्ते मनुव्वर फेर दिया। जिसके सबब आपका रूए मुबारक इतना रोशन और ताबिन्दा हो गया कि देखने वाले ताबे नज़्ज़ारा नहीं ला पाते और रूख़े रोशन की दजल्लियों को देखकर बेइख़्तियार सजदारेज़ हो जाते। महज़ सूरत कलमा पढ़ लेते और पुकार उठते कि जब अल्लाह के इस महबूब के जमाल का यह आलम है तो उस ख़ालिक़े हुस्नो जमाल का क्या आलम होगा ?

इसी की तरफ़ इशारा करते हुए साहिबे तबक़ाते शाहजहानी रक़मतराज़ हैं कि,

(तर्जुमा) ''जो कोई आपको देखता बेइख़्तियार सजदा करता उन अनवारे इलाहिया के सबब जो आपकी पेशनानी में ताबाँ थे।'' शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी ने लिखा है कि आप समदीयत पर फ़ायज़ थे। यह सालिकों का मुक़ाम है और हक़ तआला ने आपको वह हुस्नो जमाल अता फ़रमाया था कि जो आपको देखता सजदे में गिर जाता। इसलिए हमेशा चेहरे पर नक़ाब डाले रहते। (सफ़ीनतुल औलिया, सफ़ा 235 दारा शिकोह क़ादरी, तर्जुमा मुम्मद अली लुतफ़ी)'' साहिबे तज़किरतुल किराम इसकी शहादत इन अलफ़ाज़ में देते हैं,

''हज़रत बदीअ उद्दीन शाह मदार मुरीद शैख़ तैफूर बुस्तामी के थे, कहते हैं कि वह बज़ाहिर कुछ नहीं खाते थे और उनका कपड़ा कभी मैला न होता था और न कभी उस पर मक्खी बैठती थी और उनके चेहरे पर हमेशा नक़ाब पड़ा रहता था, निहायत ही हसीनो जमील थे। चारों कुतुबे समावी के हाफ़िज़ व आलिम थे। कहते हैं कि आपकी उम्र 400 बरस से ज़्यादा थी। वल्लाह आलम और तमाम दुनिया का सफ़र उन्होंने भी किया था और वह अपने वक़्त के कुत्बे मदार थे। इसलिए लोग शाह मदार कहते हैं। (तज़किरतुल किराम तारीख़ खुलफ़ाए अरब व इस्लाम.. सफ़ा 496मौलाना सैय्यद शाह मोहम्मद कबीर अबुल उलाम)''

(1) वाज़ेह हो कि हज़रत सैय्यदना बदीअ उद्दीन शाह मदार क़द्दसा सिर्रहू को हज़रत रिसालत पनाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने दस्ते मुबारक के तआमे बिहिश्ती खिलाकर खाने पीने की ज़रूरत से बेनियाज़ फ़रमा दिया था। हज़रत मख़दूम अशरफ़ जहांगीर समनानी क़द्दसा सिर्रहुन्नूरानी ने आपकी हमराही में पूरे 12 साल तक आपको खाते पीते नहीं देखा और 12 साल खुर्दो नोश ने करने की रिवायत फ़रमाई इसी पर एतमाद करते हुए हज़रत मुहद्दस अब्दुल हक़ देहलवी क़द्दसा सिर्रहुलक़वी ने 12 साल की रिवायत फ़रमाई वरना हक़ीक़त यह है कि तआमे बिहिश्ती खाने के बाद पूरी उम्र खाने पीने से बेनियाज़ रहे चुनान्चे हज़रत गुलाम अली नक्श बन्दी रहमतुल्लाह अलैह अपने मतफूज़ात में उसकी तरफ़ इशारा फ़रमाते हैं कि,

''हज़रत बदीअ उद्दीन शाह मदार क़द्दसा सिर्रहू ''कुत्बे मदार'' थे और बहुत अज़ीम शान वाले थे आपने दुआ की थी कि इलाही! मुझे भूख प्यास न लगे और मेरा लिबास मैला व पुराना न हो, वैसे ही हुआ कि इस दुआ के बाद बक़िया पूरी उम्र आपने कुछ न खाया पिया और आपका लिबास मैला पुराना नहीं हुआ वही एक लिबास विसाल तक काफ़ी रहा।

●●

ईसाले सवाब

जनाब मरहूम शमसुद्दीन ठेकेदार सागोर कुटी चौराहा, पेट्रोल पम्प के सामने, मारुति नगर का इन्तकाल तारीख 18 अक्टूबर 2013 को हो गया है। तमाम महानामा पढ़ने वालों से गुजारिश है कि मरहूम की मग़फिरत के लिए दुआ करें।

मिनजानिब

ऐहले खानदान

कामयाबी का एक बड़ा राज़ खुद पर भरोसा है।

मलंगाने किराम के बाल शरीअत के आईने में

क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन मसाइले ज़ेल में :

1. क्या शरीअते मुतहहरा के नज़दीक शाना से नीचे बाल रखना हराम है ?

2. क्या हदीस शरीफ़ लअनल्लाहुल मुतश बिहीन मिनर्रिजाल बिन्निसाइ वलमुतशब्बिहात मिनन निसाए बिर्रिजाल से शाना से नीचे बाल रखने की हुरमत साबित होती है ? और इस हदीस शरीफ़ का क्या मतलब है ?

3. अगर शाना के नीचे बाल रखना हराम है और रखने वालों पर अल्लाह जल्ला जलालहु व रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की लानत है तो वह सहाबए किराम और औलिया अल्लाह जिन्होंने शाना के नीचे बाल रखे उनके लिए शरीअते मुतहहरा का क्या हुक्म है ? जवाब मुदललल व मुफ़स्सल अता फ़रमा कर इन्दल्लाह माजूर हों।

अलमुस्तफ़ती, शाह नूर अहमद हबीब रहमानी 5 जनवरी 1994, बिल्हौर कानपुर देहात बिस्मिल्लाहहिर्रहमानिर्रहीम हामिदवं व मुसललीयवं व मुसललिमं।

औरतों के लिए तो बिल इत्तिफ़ाक़ जायज़ है अलबत्त मर्दों के लिए शानों से नीचे तक बाल रखने की सराहतन हुरमत का मसअला फ़िक़्ह की किताबों में ततब्बो व तलाश के बाद भी मेरी नज़र से नहीं गुज़रा।

शानों से नीचे तक बाल रखना हराम नहीं इसलिए कि किसी शै के हराम होने के लिए नस्से क़तई से सुबूत चाहिए और शानों से नीचे बाल रखने की हुरमत के सुबूत में कोई नस्से क़तई नहीं अगर किसी ने कहीं हराम का क़ौल किया होगा तो महज़ तादीबन व तग़लीज़न नीज़ बग़ैर उज़्रे शरई फ़र्ज़ के तर्क से हराम का सुबूत होता है पस अगर शानों से नीचे तक बाल रखने को हराम क़रार दिया जाए तो लाज़िम आएगा कि शाना से नीचे तक बाल न रखना फ़र्ज़ हो हालांकि यह फ़र्ज़ है न इसका कोई क़ाइल। दुर्रे मुख़्तार, हिन्दिया, ख़ानिया, हदाया और शरहे वक़ाया वग़ैरहा कुतुबे फ़िक़्ह में है कि ऐसे लम्बे बालों को जिन्हें सर पर लपेटा जा सके या जूड़े बांधे जा सकें उन बालों को सर पर या सर के गिर्द जूड़ा बांधकर और लपेट कर नमाज़ न पढ़े बल्कि उन्हें खोलकर नमाज़ अदा करें ताकि कराहत लाज़िम न आए।

हदीसे नबवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम है :

''नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मना किया है इस बात से कि आदमी नमाज़ पढ़े इस हाल में कि उसके बाल सर पर लपेट कर बंधे हों।'' (अबूदाऊद)

इस हदीसे पाक में मुतलक़न अक़्से शअर से मना नहीं किया गया है बल्कि अक़्से शअ़र की हालत में नमाज़ पढ़ने से मुमानिअत है। अक़्से शेर का माना है यानी (तर्जुमा) बालों को सर पर जमा करना, उसका एक माना बालों को गूंधना है कमा फ़िल हदाया, फ़ुक़हाए किराम ने मानए अव्वल की तीन सूरतें बयान फ़रमाई हैं बाज़ों ने कहा है कि सर के बीच में बालों को जमा करके बांधे, बाजों ने कहा है कि जूड़ा बनाकर सर के गिर्द लपेटे जैसा कि औरतें किया करती हैं और बाजों ने कहा है कि सर के पीछे बालों को जमा करके किसी डोरे से बांधे। इन तीनों सूरतों में से किसी पर अमल करके नमाज़ पढ़ना मकरूह है जैसा कि अलफ़ाज़े हदीस से आशकारा है ... वह मर्द जो शानों से ऊपर बाल रखते हैं वह न तो वालों का जूड़ा बांधते हैं न सर या सर कि गिर्दागिर्द लपेटते हैं और न उन्हें इसकी ज़रूरत पड़ती है कि ऐसे बालों का जूड़ा बांधना और सर पर लपेटा

जाना आदतन दुश्वार है सर पर या गिर्दे सर तो उन्हीं बालों का जूड़ा बांध कर लपेट सकते हैं जो दोश से नीचे हों, अलग़रज़ अक़्से शअ़र तो उन्हीं बालों में आदतन मुमकिन है जो शाना से नीचे हों। बरगोश व बरदोश बालों में अक़्से शअ़र दर हक़ीक़त आदतन नहीं हो सकता है।

2. तिरमिज़ी शरीफ़ में हज़रत अबू राफ़े रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु रावी, (तर्जुमा)

"हज़रत हसन बिन अली रज़ी अल्लाहु तआला अन्हुमा पर हज़रत अबू राफ़े रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु का गुज़र हुआ, वह नमाज़ पढ़ रहे थे और अपने बालों का जूड़ा बनाकर सर के पिछले हिस्से में बांध रखा था। हज़रत अबू राफ़े रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु ने आपके मुक़द्दस बालों को खोल दिया। इस पर आपने उन्हें ग़ज़बनाक निगाहों से देखा तो हज़रत अबू राफ़े रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया आप नमाज़ पढ़े ग़ज़बनाक न हों, मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से सुना है कि आपने फ़रमाया, यह शैतान का हिस्सा है, इस बाब में हज़रत उम्मे सलमा व अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ी अल्लाहु अन्हुम अजमईन से रिवायत है।

इमाम तिरमिज़ी फ़रमाते हैं अबू राफ़े की हदीस हसन है इस पर उलमा का अमल है नमाज़ की हालत में उनके नज़दीक बालों का बंधा होना मकरूह है।

हदीस अबू राफ़े से साफ़ ज़ाहिर हुआ कि हज़रत इमाम हसन बिन अली रज़ी अल्लाहु अन्हुमा के सर के बाल इतने बड़े थे कि आप उनका जूड़ा बांधकर गुद्दी की तरफ़ लपेट लेते थे और यह इसी सूरत में हो सकता है कि जब बाल शानों से नीचे हों कि शानों से ऊपर तक के बालों को जूड़ा बांधकर गुद्दी पर लपेटना आदतन बहुत ही दुशवार है बल्कि ऐसे बाल वालों को सर पर लपेटते नहीं देखा गया कि उनको इस की हाजत नही नहीं।

हदीसे मज़कूर से यह भी साबित हुआ कि शाना से नीचे तक बाल रखना हराम नहीं बल्कि हालते नमाज़ में बालों को जूड़ा बंधा रहना मकरूह है।

3. इमाम मुस्लिम अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ी अल्लाहु अन्हुमा से रावी कि उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस रज़ी अल्लाहु अन्हु को जूड़ा बांधकर नमाज़ पढ़ते देखा तो आपने उनका जूड़ा सर के पीछे बंधा था खोल दिया जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो आप से जूड़ा खोलने की वजह दरयाफ़्त की। आपने फ़रमाया कि मैंने रूसलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वस्ल्लम से फ़रमाते सुना है कि जूड़ा बांधकर नमाज़ पढ़ने वाला उस शख़्स की तरह है जिसके हाथ मूंढ़ों के पीछे बांध दिये गये हों।

"हज़रत इब्ने अब्बास ने अब्दुल्लाह बिन हारिस को देखा इस हाल मे नमाज़ पढ़ते हुए कि उनके बाल सर पर बंधे थे पीछे की तरफ़ से पस आपने खड़े होकर उन बालों को खोल दिया जब वह नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो इब्ने अब्बास के पास गये और अर्ज़ किया, क्या बात है ? आपने मेरे सर के बाल खोल दिये, तो उन्होंने फ़रमाया, मैंने रसूलल्लाह सल्ललल्लहु तआला अलैहि वसल्लम से सुना है जूड़ा बांधकर नमाज़ पढ़ने वाला उस शख़्स की तरह है जिसके हाथ मूंढ़ों के पीछे बांध दिये गये हों।"

हज़रत इमाम नोववी फ़रमाते हैं कि जूड़ा बांधकर नमाज़ पढ़ने की मुमानेअत पर उलमा मुत्तफ़िक़ है और जूड़ा बांधकर नमाज़ पढ़ने की मुमानिअत में उलमा के नज़दीक हिकमत यह है कि नमाज़ी के साथ उसके बाल भी सजदा करते हैं।

"वहुवा मकतूफ़" की शरह करते हुए साहिबे मजमअउल बेहार ने लिखा है कि इससे मुराद यह है कि सजदा करते वक़्त जिसके बाल ज़मीन पर गिरते हों और सजदा रेज़ होते हों उसको उस पर सवाब मिलता है और जिसके बाल माकूस हों वह सजदारेज़ नहीं होंगे पस वह

उस शख़्स की तरह है जिसके हाथ पीछे बंधे हों और उसकी वजह से वह सजदे की हालत में हाथ ज़मीन पर न रख सके।

4. तिरमिज़ी व बुख़ारी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी हदीसे पाक,

"नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का हुक्म है कि सात हडिडयों पर सजदा किया जाए और बाल और कपड़े न बांधे जाएं।"

के तहत शारेहे बुख़ारी अलैहिर्रहमह फ़रमाते हैं जब उनको बांधा न जाए।

इसके बाद बालों का जूड़ा बनाकर गुद्दी की तरफ़ लपेट कर नमाज़ पढ़ने की मुमानिअत की वजह वही बयान फ़रमाई है जो हज़रत अबू राफ़े की हदीस में है अलबत्ता अलफ़ाज़े हदीस कुछ मुतग़ैय्यिर हैं :

"अबू राफ़े की हदीस में मुमानिअत की हिकमत वह है जो अबू दाऊद की हदीस में मरवी है यानी अबू राफ़े ने इमाम हसन बिन अली (अलैहिमस्सलाम) को इस हाल में नमाज़ पढ़ते देखा कि आपने अपने बालों के जूड़े को अपनी गुद्दी की तरफ़ रखा था।

और हज़रत अबू राफ़े की हदीस का माना यूँ बयान किया है कि जिसके बाल सजदा के वक़्त ज़मीन पर लटकते होते हैं उसको उस पर सवाब मिलता है और चूंकि माक़ूस का बाल सजदा नहीं करता इसलिए उसका सवाब कम हो जाता है जिसकी वजह से शैतान खुश होता है और यही उसका हिस्सा है।

मज़कूरा हदीस की शरहों से शारेहीन हदीस ने वाज़ेह फ़रमा दिया कि नमाज़ी के साथ उसके बाल भी सजदा करते हैं और सजदा की हालत में बालों के ज़मीन पर गिरने से नमाज़ी को सवाब मिलता है अगर शानों से नीचे तक बाल रखना हराम होता तो सवाब के बजाए गुनाह मिलता।

5. हज़रत अबू महज़ूरा रज़ी अल्लाहु अन्हु के गेसू इतने लम्बे थे कि जब आप उन्हें ज़मीन पर बैठकर खोलते थे तो वह ज़मीन से लग जाते थे।

अल्लामा अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने मदारिजुन्नुबूवत में इस हदीस की रिवायत इब्ने ज़ुबैर के वास्ते से की है।

6. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरे सर के बालों में गेसू थे मेरी वालिदा ने फ़रमाया कि मैं उन गेसुओं को नहीं कटवाऊँगी क्योंकि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उनको खींचते और पकड़ते थे।

हज़रत सैयद मुम्मद गेसू दराज़ रहमतुल्लाह अलैह का गेसू भी शानों से नीचे तक था जैसा कि अख़बारूल अख़यार शरीफ़ में है,

सिलसिलए आलिया कुदसिया बदीइया मदारिया के अज़ीम बुर्जुग हज़रत सैयद मुहम्मद जमालुद्दीन जानेमन जन्नती रज़ी अल्लाहु अन्हु के सरे मुबारक पर शहंशाहे औलियाए किराम किबार हज़रत सैयद बदीअ उद्दीन कुत्बुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु ने अपना दस्ते मुक़द्दस फेर दिया तो आपने ज़िन्दगी भर अपने बाल नहीं कटवाए। आपके मुबारक बाल भी बहुत लम्बे थे। आप ही से गिरोहे मलंगान जारी हुआ है जिनमें हांजी मलंग अलैहिर्रहमह और कुतुब ग़ौरी जैसे बड़े बड़े जलीलुलकद्र औलिया अल्लाह गुज़रे हैं। इन हज़रात के बाल बहुत ही लम्बे होते हैं। हत्ता कि बाज़ मलंगों के बाल पांच छः मीटर लम्बे है जवाब भी मौजूद हैं। बाज़ों के इससे कम लम्बे और बाज़ों के इससे भी ज़्यादा मलंग सर के बाल कटाते ही नहीं अगर शानों के नीचे तक बाल रखना हराम होता तो सहाबए किराम और औलियाए अज़ाम शानों से नीचे तक सर के बाल क्योंकर रखते और नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हज़रत अबू महज़ूरा के लम्बे गेसुओं के लिए बरकत की दुआ क्यों फ़रमाते।

जिसने फज्र (सुबह) की नमाज छोड़ी उसके चेहरे का नूर खत्म कर दिया जाता है।

7. मदारिजुन्नुबूवत में है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू महज़ूरा रज़ी अल्लाहु अन्हु के गेसुओं के लिए बरकत की दुआ फ़रमाई, हाँ इतना ज़रूर है कि जिनके बाल शानों से नीचे तक हों वह उनको इस तरह रखें कि औरतों के बालों से तशब्बोह न हो मसलन रीश और सीना की तरफ़ बालों को डाल लिया करें और औरतों के बालों से तशब्बोह न हो सकेगा कि औरतें अपने बालों को आदतन पुस्त की तरफ़ डाला करती हैं।

यह रवा नहीं कि सर के बाज़ बालों को तरशवा दें और बाज़ को छोड़ दें मसलन आगे के बालों को छोड़ दें कि यह हिन्दुओं और बुद्धिस्ठों की वज़अ है या पीछे के बालों को तरशवा दें और आगे के बालों को छोड़ दें कि यह यहूदियों की वज़अ है।

8. इमाम अबू दाऊद हज़रत हज्जाज बिन हस्सान रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं,

मज़कूरा अहादीसे करीमा और औलियाए किराम के अहवाल से मालूम हुआ कि शानों से नीचे तक बाल रखना हराम नहीं है अलबत्ता जिसके ऐसे बाल हों वह इसका एहतियात रखे कि हिन्दुओं, बौद्धों, यहूदियों और औरतों के बालों से तशब्बोह न होने पाये।

और बेहतर व अफ़ज़ल और अहब्ब व मुस्तहसन यह है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सुन्नत इख़्तियार करते हुए गोश या दोश तक ही बाल रखे।

जवाब 2

इस हदीसे पाक से शानों से नीचे बाल रखने की मुतलक़न हुरमत तो क्या मुतलक़न कराहत भी साबित नहीं होती। हाँ औरतों से तशब्बोह करने वाले मर्दों पर जैसे हिजड़े, ज़न्खे वग़ैरह और मर्दों से मुशाबिहत करने वाली औरतों पर वईद ज़रूर की गयी है।

शानों से नीचे बाल रखने से लाज़िम नहीं कि औरतों के बालों से तशब्बोह हो जाए, हज़रत अनस बिन मालिक हज़रत अबू महज़ूरा हज़रत इमाम हसन बिन अली और अब्दुल्लाह बिन हारिस रज़ी अल्लाहु तआला अन्हुम के मुबारक बाल औरतों से क़तअन मुशाबह न थे और मलंगाने सिलसिलए आलिया बदीइया मदारिया और ख़्वाजा गेसू दराज़ के बाल और सैयद जमालुद्दीन जानेमन जन्नती के बाल औरतों के बालों से बिल्कुल मुशाबह नहीं इसी तरह उस शख़्स के बाल जो रीश और सीने की तरफ़ आगे डाले जाते हों औरतों के बालों से मुशाबह नहीं कि औरतें अपने बालों को आदतन पुश्त की तरफ़ डालती हैं।

बुख़ारी शरीफ़ में है,

एक रिवायत दूसरी रिवायत की तफ़सीर होती है पस अलमुशतबहीन का माना अलमुख़न्नसीन हुआ।

मुफ़स्सिरीने हदीस के नज़दीक हदीसे मज़कूर का मतलब यह है कि वह लिबास और ज़ीनत जो औरतों के लिए मख़सूस हैं उन्हें मर्द न अपनाएं और जो मर्दों के लिए ख़ास हैं उन्हें औरतें न इख़्तियार करें।

यही हुक्म चाल चलन और बातचीत में तशब्बोह अपनाने का है।

मजीद इसकी वज़ाहत करते हुए फ़रमाते हैं कि जहाँ मर्दों और औरतों के लिबास यकसाँ हों और लिबास में एक दूसरे से इम्तियाज़ न होता हो वहाँ किसी दूसरी चीज़ से इम्तियाज़ कर लेंगे जैसे एहतेजाब व पर्दा वग़ैरह से।

मालूम हुआ कि अगर मर्दों और औरतों की वज़अ क़तअ में किसी तरह से कोई फ़र्क़ हो जाए तो तशब्बोह में दाख़िल नहीं। इमाम कस्तलानी ने भी हदीस मज़कूर में तशब्बोह से मुराद लिबास और ज़ीनत में तशब्बोह लिया है।

''यानी लिबास और ज़ीनत की चीज़ों में मसलन दुपट्टा ओढ़नी और बालियाँ पहनने में मर्द व औरत एक दूसरे का तशब्बोह न अपनायें।

मजमउल बेहार में ''अलमुख़सीन'' की तशरीह यह है,

अल्लामा किरमानी व अल्लामा नुवी की तशरीहात से मालूम हुआ कि मुख़न्नत से मुराद वह शख़्स है जो अफ़आल व अक़वाल और अख़लाक़ व हरकात में औरतों से तशब्बोह इख़्तियार करे। नीज़ मुख़न्नस की दो क़िस्में हैं, मुख़न्नत तबई और मुख़न्नस तकलीफ़ी, मोजिबे लागत मुख़न्नस तकलीफ़ी है जो बतकल्लुफ़ औरतों जैसा बनने की कोशिश करता है जैसे नाचने गाने वाले लौंडे और अन्दो। मुख़न्ना ख़िलक़ी मोमिनी लागत नहीं।

अलग़रज़ बुखारी शरीफ़ की दूसरी रिवायत और मुफ़स्सिरीन हदीस अल्लामा ऐनी, अस्क़लाबी, कुस्तलानी, किरमानी, नूवदी और साहिबे मजमउल बहार की तशरीहात से साबित हुआ कि हदीस पाक से मुराद वह मुख़न्निसीन हैं जो बतकल्लुफ़ औरत बनना चाहते हैं और औरतों से तशब्बोह इख़्तियार करते हैं जैसे नाच नौटंकी में नाचने गाने वाले वग़ैरह उन्हीं लोगों पर अल्लाह और उसके रसूल की लानत है।

और वह मुसलमान जो महज शानों से नीचे तक बाल रख लेते हैं और अपने बालों को औरतों के बालों से मुशाबह नहीं होने देते बल्कि किसी न किसी तरह फ़र्क़ व इम्तियाज़ कर लेते हैं वह मोजिबे लानत नहीं। अक्सर व बेशतर यह देखा गया है कि जो मुसलमान शानों से नीचे तक बाल रख लेते हैं नमाज़ रोज़े के पाबन्द होते हैं ऐसे लोगों पर लानत भेजने से नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना फ़रमाया है।

11. चुनांचे इमाम तिरमिज़ी हज़रत समरह बिन जुन्दुब रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु से रावी हैं, (तर्जुमा)

"मुसमलानो! आपस में एक दूसरे पर अल्लाह तआला की लानत अल्लाह तआला के ग़ज़ब और जहन्नुम के ज़रिया लान तान मत करो।"

12. अगर किसी मुसलमान पर लानत की जाए और वह मुस्तहक़े लानत न हो तो उलटे वह लानत, लानत करने वाले पर लौटती है, हदीस पाक में है,

"मन लानः शैअन लैसा बिअहले रजअततल लानः" अलैहि रवाहा तिरमिज़ी व अबू दाऊद, वल्लाहु आलम बिस्सवाब)

शानों से नीचे तक बाल रखना हराम नहीं है जैसा कि जवाब न. 1 और नं. 2 से साबित हुआ अलबत्ता अफ़ज़ल व महबूब और खुदा के हबीब नबीए अकरम सल्लल्हु अलैहि वसल्लम की सुन्नत आदत यह है कि मर्द के बाल बरदोश या बरगोश हों।

जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है।

अगर सानों से नीचे तक बाल रखने को मुतलक़न हराम व मोजिबे लानत क़रार दिया जाए तो मज़कूरा सहाबए किराम और औलियाए एज़ाम को हराम का मुरतकब गरदानना लाज़िम आयेगा जो खुद हराम व मोजिबे लानत है।

अल्लाह तआला सहाबए किराम और औलियाए एज़ाम से राज़ी है और वह अल्लाह तआला से राज़ी हैं। नबीए करीम सल्ललहु अलैहि वसल्लम ने सहाबए किराम पर लान व तान करने से मना फ़रमाया है। क़ाला ला तसुब्बू असहाबी'०+ मेरे असहाब को गाली मत देना।

वल्लाहु तआला आलमु बिस्सवाब।
अलफ़क़ीर इला रब्बिहिल जलीलिल क़वीयि
मुहम्मद इस्राफ़ील हबीबी गुफ़िरलहु
ख़ादिम दारूल इफ़्ता
जामिया अरबिया मदारूल उलूम
मदीनतुल औलिया मकनपुर शरीफ, कानपुर

नात शरीफ़

तेरा इख़्तियारो मन्सब कोई जानता नहीं है
तू मदारे हर दोआलम तेरे हाथ क्या नहीं है
तेरा उम्र भर का रोज़ा यह बता रहा है हमको
तेरे मिस्ल औलिया में कोई दूसरा नहीं है
तू नवाज़िशों की बारिश तू अताओं का समन्दर
जिसे जो भी चाहे दे दे तेरे पास क्या नहीं है
जिसे नाखुदाई हासिल हो तेरी मदारे आलम
वह सफ़ीना बहरे ग़म में कभी डूबता नहीं है
मेरे जैसों पर भी आक़ा तेरी बेपनाह शफ़क़त
तेरी बन्दा परवरी की कोई इन्तिहा नहीं है
है अज़ल से मेरा हिस्सा 'वली' उनकी बख़्शिशों में
सिवा उनके मेरा अपना कोई दूसरा नहीं है

अन्सार व महाजिर भाई-भाई

हजरात! मुहाजिर चूँकि इन्तिहाई बेसरो-सामानी की हालत के बिल्कुल खाली हाथ अपने अह्लो-अयाल को छोड़कर मदीना आए थे इसलिए परदेस में मुफलिसी के साथ बहशतो-बेगांगी और अपने अह्ले-अयाल की जुदाई का सदमा महसूस करते थे इसमें शक नहीं कि अन्सार ने उन मुजाहिरीन की मेहमान-नवाजी और दिलजुई में कोई कसर नहीं करते थे क्योंकि वह लोग हमेशा से अपने दस्त व बाजू की कमाई खाने के खूगर थे इसलिए जरूरत थी कि मुजाहिरीन की परेशानी को दूर करने और उनके लिए मुस्तकिल जरीआ-ए-मुआश मुहया करने के लिए कोई इन्तिजाम किया जाए। इसलिए हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने ख्याल फरमाया कि अन्सार व मुहाजिरीन ने रिश्ता-ए-उखुव्वत (भाई-चारा) काएम करके उनको भाई-भाई बना दिया जाए। ताकि मुहाजिरीन दूसरे के मददगार बन जाने से मुहाजिरीन के जरीआ-ए-मआश का मसअला भी हल हो जाए। चुनान्चे मस्जिदे नबवी की तअमीर के बाद एक दिन हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने हजरते अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान में अन्सार और मुहाजिरीन को जमअ फरमाया। उस वक्त तक मुहाजिरीन की तअदाद पैंतालीस या पचास थी। हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अन्सार को मुखातिब करके फरमायां यह मुहाजिरीन तुम्हारे भाई है फिर मुहाजिरीन व अन्सार में से दो-दो शख्स को बुलाकर फरमाते गए कि यह और तुम भाई-भाई हो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इरशाद फरमाते ही यह रिश्ता-ए-उखूव्वत बिल्कुल हकीकी भाई जैसा रिश्ता बन गया। चुनान्चे अन्सार ने मुहाजिरीन को अपने साथ ले लाकर अपने घर की एक-एक चीज सामने लाकर रख दी। और यह कह दिया कि आप हमारे भाई है इसलिए इन सब सामानों में आधा आपका और आधा हमारा हे हद हो गई कि हजरते सअद बिन औफ रजियल्लाहु तआला अन्हु के भाई करार पाए थे उनकी दो बीवियाँ थी हजरते सअद बिन रबीअ अन्सारी रजियल्लाहु तआला अन्हु ने हजरते अब्दुर्रहमान बिन औफ रजियल्लाहु तआला अन्हु से कहा कि मेरी ? एक बीबी जिसे आप पसन्द करें, मैं उस को तलाक दे दूँ। और आप उससे निकाह कर लें।

अल्लाहु अकबर! इसमें शक नहीं कि अन्सार का यह इसारा एक ऐसा बे-मिसाल शाहकार है कि अकवामे आलम की तारीख मे इस की मिसाल मुश्किल ही से मिलेगी। मगर मुहाजिरीन ने क्या तर्जे अमल इख्तयार किया यह भी एक काबिले तकलीद कारनामा है हज़रत सअद बिन रबीअ अन्सारी रजियल्लाहु तआला अन्हु की इस मुखलिसाना पेशकश को सुनकर हजरते अब्दुर्रहमान बिन औफ रजियल्लाहु तआला अन्हु ने शुक्रिया के साथ यह कहा कि अल्लाह तआला यह सब माल व मताअ और अहलो-अयाल आप को मुबारक फरमाए मुझे तो आप सिर्फ बाजार का रास्ता बता दीजिए। उन्होंने मदीना के मशहूर बाजार ''कैनुकाम'' का रास्ता बता दिया। हजरते अब्दुर्रहमान बिन औफ रजियल्लाहु तआला अन्हु बाजार गए। और कुछ घी, पनीर खरीद कर शाम तक बेचते रहे। इसी तरह रोजाना वह बाजार जाते रहे और थोड़े ही अर्से में वह काफी मालदार हो गए और उनके पास इतना सरमाया हो गया कि उन्होंने शादी करके अपना घर बसा लिया। लब यह बारगाहे रिसालत हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में हाजिर हुए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने दर्याफ्त फरमाया कि तुम ने बीबी का कितना महर दिया ? अर्ज किया कि पाँच दिरहम बराबर सोना। इरशाद फरमाया कि अल्लाह तआला तुम्हें बरकते अता फरमाए। तुम दअवते वलीमा करो अगरचे एक ही बकरी हो।

(बुखारी बाबूल वलीमा वल वबशाह स. 777 जि. 2)

और रफ्ता-रफ्ता तो हजरते अब्दुर्रहमान बिन औफ रजियल्लाहु तआला की तिजारत में इतनी खैरो-बरकत हुई कि खुद उन का कौल है कि '०-मैं मिट्टी को छू देता हूँ तो

सोना बन जाती है'' मन्कुल है कि उनका सामंने तिजारत सात सौ ऊँटों पर लद कर आता था और जिस दिन मदीना में उनका सामान पहुँचता था तो तमाम शहर में धूम मच जाती थी। (असदुल गाबा जि. 3314)

हरजते अब्दुर्रमान बिन औफ रजियल्लाहु अन्हु की तरह दूसरे मुहाजिरीन ने भी दुकाने खोल ली। हजरते अबू बकर रजियल्लाहु अन्हु कपड़े की तिजारत करते थें हजरते उसमान रजियल्लाहु अन्हु कैनुकाअ के बाजार में खजूरों की तिजारत करने लगे। हजरते उमर रजियल्लाहु तआला अन्हु भी तिजारत में मशगूल हो गए थे। दूसरे महाजिरीन ने भी छोटी बड़ी तिजारत शुरू कर दी। गर्ज बावजूद यह कि मुहाजिरीन के लिए अन्सार का घर मुस्तकिल मेहमान-खाना था मगर महाजिरीन ज्यादा दिनों तक अंसारों पर बोझ नहीं बने बल्कि अपनी मेहनत और बे-पनाह कोशिशें से बहुत जल्द अपने पाँव पर खड़े हो गए।

मशहूर मुअर्रिखं इस्लाम हजरत अल्लामा इब्ने अब्दुल बर्र अलैहिर्रमा का कौल है कि या अक्दे मुआखत (भाई-चारा का मुआहदा) तो अन्सार व मुहाजिरनी के भी दर्मियान हुआ। जिसमें हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक महाजिरीन को दूसरे मुहाजिर का भाई बना दिया। चुनान्चे हजरते जुबैर रिजयल्लाहु तआला अन्हुमा और हजरते उसमान व हजरते अब्दुर्रहमान बिन औफ रजियल्लाहु अन्हुमा के दर्मियान जब भाई-चारा हो गया तो हजरते अली रजियल्लाहु तआला अन्हुमा ने दरबारे रिसालत मे हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सरल्लम में अर्ज किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आप ने सहाबा को एक दूसरे का भाई बना दिया। लेकिन मुझे आप ने किसी का भाई नहीं बनाया। आखिर मेरा भाई कौन है ?

तो हुजूर सल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अन्ता: अख़ी फिद दुन्या वल-आखिरति यानी तुम दुनिया और आखिरत में मेरे भाई हो। (मदारिजुन-नुबुव्वत जि.स. 7)

●●

शेष 13 का बकिया

मदार के आस्तानए पाक कर हाज़िर होकर अपनी अक़ीदत मन्दियां पेश कीं।

चूँकि शमसी और क़मरी निज़ाम में हर साल तक़रीबन दस दिन का तग़य्युर होता है इसलिए जमादिल मदार के महीने से बसन्त पंचमी का दिन दूर होता चला गया इस तरह यह दोनों मवाक़े तारीख़ी अहमियत के हामिल बन गए। हनूज़ आजतक वही रिवायत क़ायम व दायम हैं।

मकनपुर शरीफ़ ही नहीं हिन्दुस्तान के बेशतर मुक़ामात पर लगने वाले इन मेलों के अलावा बैरूने हिन्दुस्तान में भी मदार के मेले लगते हैं। पाकिस्तान के हैदराबाद में दरगाहे मदार साहब पर, कोलम्बो में चिल्लए मदार पर, अज़बकिस्तान में चिल्लए ज़िन्दा शाह मदार, पाकिस्तान के साहिवाल में चेक नम्बर 90 में, सिंध में फ़क़ीर के पेड़ पर मेला, कराची में मंगूपीर की दरगाह पर कुत्बुल मदार का मेला, बैरूत, मिस्र, मोरक्को और अफ़ग़ानिस्तान में तमाम मुक़ामात पर कुत्बुल मदार के चिल्लों पर मदार के मेले लगते हैं।

सरज़मीने मकनपुर शरीफ़ सैकड़ों बरस से लगने वाले मेले में लाखों लोग हाज़िरी देते हैं। इस क़ौल की तसदीक़ सुनकर या पढ़कर ही नहीं देखकर की जा सकती है। तारीख़ बताती है कि शहंशाह औरंगजेब आलमगीर के सगे भाईआ दारा शिकोह ने अपनी किताब सफ़ीनतुल औलिया में मेले का ज़िक्र करते हुए तहरीर किया है कि जब में बारगाहे कुत्बुल मदार में हाज़िरी के लिए मकनपुर शरीफ़ पहुँचा तो वहाँ पाँच छः लाख का मजमा था। दारा शिकोह के इस क़ौल और तहरीर की रोशनी में मदार के मेले की मक़बूलियत का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

●●

मनकबद

आता जो अश्कबार है शहरे मदार में
मिलता उसे करार है शहरे मदार में
दुनिया ने अपने दर से हो ठुकरा दिया जिसे
उसको मिला वक़ार है शहरे मदार में
जिसको न हो यक़ीं वह 'क़मर' आके देख ले
मिलता नबी का प्यार है शहरे मदार में

अपने रब की तरफ बुलाने के लिए बेहतरीन हिकमत से दावत दो।

हलाल की तलाश

हदीस 1. यानी जिसने एक दिरहम भी हलाल की कमाई से हासिल करके हलाल मद में खर्च किया अल्लाह तआला सूद और हराम खोरी के अलावा इसका हर गुनाह बख्श देगा।

हदीस 2. यानी हलाल रोज़ी तल्ब करना हर मुसलमान पर फर्ज है।

हदीस 3. यानी जो शख्स एक लुकमा भी हराम खाले अल्लाह तआला उसकी चालीस दिन की इबादत कुबूल नहीं फ़रमाता।

हदीस 4. यानी ऐ लोगो अमानत अपने घरों से अमानत वालों के हवाले कर दो अगर तुम ने ऐसा न किया तो तुम्हारे आमाल तुम्हें कुछ नफा न देंगे और हराम के घर में मौजूद होते हुए लाइलाहा इल्ललल्लाह पढ़ना भी तुम्हें कुछ नफ़ा न देगा।

हदीस 5. यानी हर वह गोश्त जो हराम व ख़बीस माल से बना हो वह जहन्नुम के लायक है।

हदीस 6. यानी जो चालीस दिन मुतावातिर हलाल रिज़्क खाये अल्लाह तआला उसका दिल रौशन फरमा देता है और उसकी जुबान पर इल्मो हिकमत के चश्मे जारी फरमा देता है और उसको दुनिया व आखिरत में राह दिखायेगा।

हदीस 7. यानी हज़रत माज़ बिन जबल रजि अल्लाहो तआला अन्हा रावी कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन खुदा की अदालत से बन्दा अपने कदम न खिस्का पायेगा जब तक कि उससे चार चीजों के बारे में सवाल न हो जायेगा।

1. ज़िन्दगी के बारे में तुमने इसको किस चीज़ में फना किया।

2. जिस्म के बारे में कि तुमने किसमें इसको ख़त्म किया।

3. इल्म के बारे में कि तुमने कितना इस पर अमल किया।

4. माल के बारे में कि तुमने कहां से इसको हासिल किया और किस में खर्च किया।

दोस्तो! इबादत व इताअत अल्लाह के खजानों में जमा है इसकी चाबी दुआ है इसके दांत रिज़्के हलाल है जब चाबी के दांत नहीं तो दरवाज़ा नहीं खुलेगा और जब दरवाजा नहीं खुलेगा तो जिस शै में इताअत का खजाना है वहां तक रसायीं कैसे हासिल होगी।

हजरत सफियान सूरी रहमतुल्लाह तआला अलैह फरमाते हैं कि एक आयत पढ़ा करता था तो उससे मुतअल्लिक मेरे सामने इल्म के सत्तर दरवाजे खुल जाते थे जबसे मैं उमरा और हुक्काम के माल खाने लगा हूँ आयत पढ़ता हूँ तो एक दरवाजा भी नहीं खुलता। दोस्तों हराम रोजी वह आग है जो फिक्र की चरबी को पिघला देती है। जिक्र की लज़्जत को मिटा देती है, अख़्लास नियत के लिबास को जला देती है। मेरे दोस्तो हराम बसीरत अंधी होती है। बस हलाल माल जमा करो और उसके एतदाल से खर्च करो। खुद को और अहलो अयाल को हराम खोर की सोहबत से बचाओ फर्श जमीन पर रहने वाले बन्दों खुदा से डरो और रिज़्क हलाल तलाश करो।

बाज़ अकलमन्दों ने मोमिन व मुनाफ़िक की पहचान इस तौर पर भी बयान फरमायी है कि मुनाफिक दुनिया को हिर्स व हवस से हासिल करता है और शक व शुबाह की बुनियाद पर रोकता है और रियाकारी के तौर पर खर्च करता है मोमिन दाना खौफ़ से हासिल करता है और

शुक्र से रोकता है और सिर्फ अल्लाह की रज़ा के लिए खर्च करता है। (तम्बीहुल ग़ाफेलीन)

हैरत व तअज्जुब है आप पर कि डाक्टर के बताने पर आप बीमारी के खौफ़ से हलाल से परहेज़ करते हैं। और हकीमों के हकीम तबीबों के तबीब सैय्यदुल मुरसलीन अलैहिस्सलातो वस्सलाम के बताने से जहन्नुम के ख़ौफ से हराम से परहेज़ नहीं करते। अगर आप रिज़्क हलाल व तैय्यब हासिल करना चाहते हैं तो पाँच बातों का बहुत ध्यान रखिए। 1. अल्लाह तआला के फरायज़ में तलाशे रिज़्क की वजह से ताख़ीर व कोताही हरगिज़ न आये। 2. रिज़्क की वजह से हरगिज़ अल्लाह की मख़लूक में किसी को तकलीफ न पहुँचे। 3. अपने अहलो अयाल की इफ़्फ़त व पाक दामनी की नियत से माल हासिल करें न कि मालदारी और ज़ख़ीरा अन्दोजी की नियत से। 4. बहुत ज्यादा अपने आप को कमाई के जन्जाल नमें न डालें। 5. आपको जो रिज़्क हासिल हो उसे अपने हाथों की कमायी न समझें बल्कि इसे अतियाये रब्बानी जानें और कसब तो एक सबब है। (तम्बीहुल गाफ़िलीन)

हराम ख़ोर की इबादत मक़बूल नहीं : रसूलल्लाह सल्ललहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया। नमाज़ पढ़ते पढ़ते कमान बन जाओ और रोज़ा रखते तांत हो जाओ तब भी यह सब कुछ बगैर परहेज़गारी और हराम से बचे बगैर नफ़ा न देंगे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम मुझसे छः चीजों का वादा कर लो मैं तुम्हारे लिए जन्नत का जिम्मेदार हूँ।

. जब बात करो तो झूठ न बोलो। 2. जब वदा करो तो वादाखिलाफी न करो। 3. अमानत में ख़्यानत न करो। 4. अजनबी औरतों को देखने से आँखें बन्द कर लो। 5. अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाजत करो। 6. हराम माल से अपने हाथों को रोक लो, जन्नत में दाखिल हो जाओगे।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक रहमतुल्लाह अलैहि फरमाते हैं कि हराम के एक पैसे से बचना एक लाख सदके करने से बेहतर है। हिकायतः – हज़रत हस्सान बिन अबू सनान रहमतुल्लाह अलैहि साठ बरस तक पीठ जमीन से न लगाकर सोये न ही पेटभर अच्छा खाना और न ही ठण्डा पानी पिया। लेकिन इन्तिकाल के बाद किसी ने ख्वाब में देखा देख कर दरियफ्त किया के हुजूर आपके साथ क्या मामला हुआ बोले सब बेहतर है लेकिन अभी जन्नत से रोक दिया गया है उस एक सूई की वजह से जो एक पड़ोसी से उधार ली थी और मरने से पहले वापस न कर सका। मुसलमानों ! जहन्नम से बचना है तो हराम से बचो।

ग़ाफिल बन्दो होश में आओ.

हदीस ए इबरत :

हदीस – यानी नेकी पुरानी नहीं होती गुनाह भुलाया नही जायेगा और हिसाब लेने वाला फना नहीं होगा जो चाहो करो जैसे करोगे वैसा भरोगे। ऐ नादान तुझे कुछ इल्म है।

रसूलल्लाह सल्लल्लहाो अलैहि वसल्लम के इस्लामी चमन की बुलुबलें हो। बुलुबल को चमन में सुकून मिलता है। गोबर का कीड़ा गोबर में सुकून पाता है। जो जिसके लिए पैदा किया गया उसको उसी में चैन आता है। हर जानवर की ग़िज़ा जुदागाना है, वह अपनी ही ग़िज़ा खाकर जी सकता है। बकरी गोश्त नहीं खा सकती, कुत्ते चारा नहीं चर सकते। अगर ऐसा करेंगे तो जान से हाथ धोना पड़ेगा।

ऐसे ही मोमिन व काफिर की गिजायें मुख्तिलिफ़ हैं। मोमिन की ग़िज़ा हलाल व तैय्यब है वह इससे फूले फलेगा और काफिर की गिज़ा हराम है वह इससे पलेगा।

अपनी मिल्लत को कयास अकवाम आलम पर न कर

है जुदा तामीर में कौमे रसूले हाशमी।

हज़रत उमर रज़ि.

हज़रत उमर इल्म, परहेजगारी, नर्मी और खाकसारी में बहुत आगे थे। काफ़िरों के मुकाबले में आप सख्त थे। अद्ल और इन्साफ पर क़ायम रहते और रसूलुल्लाह सल्लल्लाह की सुन्नत की पूरी पैरवी करते। रसूलुल्लाह सल्लल्लाह के जमाने में बद्र, उह्द, फत्हे मक्का, खैबर और तबूक की लड़ाइयों में हुजूर के साथ थे।

हज़रत उमर की खिलाफ़त के जमाने के एक हजार छत्तीस हजार फतह हुए और चार हजार मस्जिदें तामीर हुई। दमिश्क़, रूम, हम्स, नसीबैन, अस्क़लान, तुराबलस वग़ैरह आपके जमाने में फतह हुए। इसी तरह बैतुल मक़्दिस, यरमूक, मिस्र, निहावंद, रय, असफ़हान और फ़ारस वग़ैरह भी आप ही की खिलाफ़त के जमाने में फ़तह हुए।

आपके रौब और हैबत से ईरान और रूम के बादशाह लरजते थे लेकिन आपने अपनी खाकसारी में फ़र्क़ आने नही दिया। वही लिवास पहनते और उसी तरह रहते जैसे ख़िलाफ़त से पहले पहने रहते थे। सफ़र में हों या घर में कोई पहरेदार या मुहाफ़िज नहीं रखते थे।

इस्लाम क़ुबूल करने का वाक़िआ

हज़रत उमर खुद फ़रमाते थे कि कि एक रात मैं अपने घर से निकला तो रसूलुल्लाह को काबे में नमाज पढ़ते पाया। मैं आपके पीछे खड़ा हो गया। आपने सूरः फ़ातिहा पढ़ी तो मुझे इस सूरत पर बड़ी हैरत हुई। मैंने दिल में कहा कि यह शख्स शायर है। तब तक आपने यह आयत पढ़ी 'इन्नहू ल कौलु रसूलिन करीम। वमा हु व बिक़ौलि शायर क़लीलम मा तुअ्मिनुन।'

(यह एक बुजुर्ग रसूल का कलाम और यह किसी शायर का कलाम नहीं। तुम बहुत कम ईमान लाते हो।)

हज़रत उमर को ख्याल हुआ 'क्या यह काहिन है कि मेरे दिल की बात जान गए।'

लेकिन इसके बाद ही आपने यह पढ़ा 'वला बिक़ौलि काहिन क़लीलम मातज़क्करून। तनजीलुम मिर्रब्बिल आलमीन।

(और न किसी काहिन का कलाम है। तुम बहुत ही कम ध्यान करते हो, उतारा हुआ है सारी दुनिया के लिये रब की तरफ़ से।)

हज़रत उमर कहते हैं कि इन आयतों के सुनने से मुझ पर बड़ा असर हुआ।

एक रिवायत में है कि हज़रत उमर एक दिन रसूलुल्लाह के क़त्ल के इरादे से घर से निकले, लेकिन रास्ते में उन्हें अपनी बहन और बहनोई के ईमान लाने की खवर मिली तो उनके घर गये और उन्हं मारा-पीटा और फिर आखिर में क़ुरआन सुना, जिससे उनका दिल पूरे तौर पर नर्म पड़ गया और वह ज़ैद बिन अरक़म के मकान में पहुंचे, जहां रसूलुल्लाह छिपकर लोगों को दीन की तालीम देते थे। फिर वहां पहुंच कर आपने इस्लाम का कलमा पढ़ा।

हज़रत अली का बयान है कि हज़रत उमर के अलावा किसी ने खुलकर हिजरत नहीं की। हज़रत उमर ने जब इरादा किया तो हथियार बांधा। तीर कमान लिया और फिर मस्जिदे हराम में आए जहां क़ुरैश के लोग बैठे हुए थे। तवाफ़ किया, नमाज़ पढ़ी फिर उन लोगों से कहा 'जो कोई अपने मां-बाप को बेवल्द और अपने लड़कों को यतीम और अपनी बीवी को बेवा करना चाहे, इस वक़्त वह आकर मुझसे मिले। किसी को हिम्मत न हुई कि वह कुछ कहता।

अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में जब हज़रत उमर मुल्क शाम में पहुँच रहे थे तो उस मुल्क के ज़िम्मेदार आपके के लिए निकले। और उन्होंने कहा 'आप ऊंटनी छोड़कर घोड़े पर सवार हों ताकि लोगों पर शौकत और हैबत जाहिर हो।'

हज़रत उमर ने फ़रमाया 'अना क़ौमुन अअ्ज़नल्लाहु बिल इस्लामि।' (हम वह क़ौम है जिसे खुदा ने इस्लाम के ज़रिए इज़्ज़त बख्शी है।)

सलाम करने से आपस में मोहब्बत बढ़ती है।

एहतियात इतना करते थे कि जब इस्लामी फ़ौज शाम की तरफ़ रवाना हुई तो आपके बेटे अब्दुल्लाह बिन उमर ने कहा 'लश्कर के साथ मैं भी जिहाद में जाना चाहता हूँ।' तो हज़रत उमर ने फ़रमाया, मुझे डर है कि तू कहीं जिना में गिरफ़्तार न हो जाए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ने कहा 'ऐ अमीरूल मोमिनीन! मेरे बारे में आप ऐसा गुमान करते हैं।

हज़रत उमर ने फ़रमाया 'मुमकिन है मुसलमानों को फ़तह हासिल हो और कोई लौंडी बिके और लोग तेरे साथ तुझे खलीफ़ा का बेटा समझ कर क़ीमत में रियायत करें और तू जाहिरी हुक्म को देखते हुए ख़रीद को सही समझे और उस लौंडी को हाथ लगाए तो हक़ीक़त में यह ज़िना होगा।'

हज़रत उमर रात में अक्सर लोगों का हाल मालूम करने के लिए ग़श्त लगाया करते थे। एक रात वह गुजर रहे थे कि एक औरत अपनी बेटी से कह रही थी 'उठ दूध में पानी मिला दें।'

बेटी ने कहा 'क्या तुझे खबर नहीं है कि अमीरूल मोमिनीन ने मुनादी की है कि कोई दूध में पानी न मिलाए।'

माँ ने कहा, 'इस वक़्त न अमीरूल मोमिनीन हैं न मुनादी है।'

लड़की ने कहा, 'हमारे लिए यह मुनासिब नहीं कि हम जाहिर में तो फ़रमांबरदारी करें और तनहाई में नाफ़रमानी – अल्लाह तो देख रहा है।'

हज़रत उमर इस बात से इतना खुश हुए कि उस लड़की से अपने बेटे आसिम का निकाह कर दिया। इसी लड़की की नवासी हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की माँ हुई' जो बहुत नेक खलीफ़ा हुए और जिन्होंने हज़रत उमर की याद ताज़ा कर दी।

हज़रत उमर जब किसी को हाकिम बनाकर भेजते तो उस को लिखते थे कि ऐश और सजावट से दूर रहो। कीमती और बारीक कपड़ा मत पहनो, मैदे की रोटी मत खाओ, तुर्की घोड़े पर मत सवार हो, अपने दरवाजे पर जोबदार मत बिठाओ, ताकि लोग आसानी से अपनी ज़रूतें बयान कर सकें। अद्ल और इंसाफ़ के खिलाफ़ मत जाओ।

●●

जश्ने दस्तारे फ़जीलत व उर्स मुफ्तीए मिल्लत का इख्तिताम

राजस्थान का मर्कजी इदारा दारूल उलूम रज़ा ए मुस्तफा विज्ञान नगर, कोटा का सालाना उन्नीसवां जलसा दस्तारे फजीलत व बानिये इदारा हजरत मुफ्ती अख्तर हुसैन का तेरहवां उर्स मुफ्तीए मिल्लत 11 सफर 1435 हिजरी मुताबिक 14 दिसम्बर 2013 बरोज शनीचर को हुआ। सुबह मुफ्तीए मिल्लत के मजार शरीफ पर कुरान खानी हुई फिर खत्में बुखारी शरीफ जिसमें कसीर तादाद में उल्मा ने शिरकत की, बाद नमाजे असर मुफ्ती साहब के मकान से चादर का जुलुस रवाना हुआ जिसमें सैकड़ों मुरीद, अकीदतमंद शार्गिदों का काफला था जो विज्ञान नगर की शाहराहों से गुजरता हुआ मुफ्तीए मिल्लत के मजार पर पहुंच गया जहां कोटा शहर के खानकांहों के सुफीए इकराम की सरपस्ती में चादर व फूल पेश किये गये।

बाद नमाजे ईशा जलसे का आगाज तिलायते कुरान मजीद से हुआ जिसकी सदारत, काजीए शरीअत हजरत अल्लामा अल्हाज मुफ्ती मोहम्मद शमीम अशरफ रजवी ने फरमाई जश्ने में 4 आलिम, 3 हाफिज, 3 कारी को दस्तारबन्दी करके सनद और जुब्बा से नवाजा गया। हजरत अल्लामा इन्तेजार आलम कर्नाटक, काजी रियाज अहमद तेगी, मौलना मुबारक हुसैन मिसबाही ने खिताब किया। शायरे इस्लाम जनाब इफ्तेखार जमशेदपुर झारखण्ड, उल्फत कमाली बिहार, अशरफ बिलाली बरेली ने अपनी तर्ज में शानदार कलाम पेश किए। हजरत सुफी अब्दुल रहमान साहब, खलीफा हुजुर मुफ्तिए आजम हिन्द की रिक्कत अजिम दुआओं के साथ सलातो सलाम के साथ जलसा सम्पन्न हुआ।

अल गुरसील नईम अशरफ, कोटा

माँ एक पेड़ है। जिसके पास बैठने से ज़िन्दगी भर की थकान दूर होती है।

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की पैदाईश

खुदा तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जानवर, बकरियां, खेती का सामान और बहुत कुछ दिया था। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दिल में यह ख्याल आया कि खुदा का हम पर बहुत करम है उसने हमें दुनिया और आखिरत की नेमत बख़्शी है। अगर वह अपनी रहमत से मुझे एक बेटा इनायत करे तो वह नुबूवत और रिसालत के काम में हमारा वारिस होगा।

खुदा ने उनकी यह नेक ख्वाहिश पूरी की और उन्हें हज़रत हाजरा के पेट से एक लड़का इनायत फ़रमाया। बाप का दिल बाग़-बाग़ हो गया। हज़रत इब्राहीम के मुंह से निकला : **'अलहम्दु लिल्ला हिल्लजी व ह् व ली अलल कि ब रे इस्माईल' (उस खुदा का शुक्र है जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल दिया।) इस तरह हज़रत इब्राहीम ने खुदा का शुक्र अदा किया।**

बुढ़ापे की औलाद बहुत प्यारी होती है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से बहुत मुहब्बत करते थे। हुक्मे इलाही पहुँचा -

ऐ इब्राहीम मां-बेटे को बियावान में छोड़ और किसी का ख़ौफ़ न कर।'

हज़रत इब्राहीम बेचैन दिल और आंसू भरी आंखें लेकर मक्का की तरफ़ बढ़े। मक्का के करीब एक मैदान में हज़रत हाजरा और हज़रत इस्माईल को छोड़ कर घर की तरफ़ बाग मोड़ ली।

बीवी हाजरा ने सब्र के साथ बच्चे को गोद में लिया (वह परेशान थीं) मैदान खुश्क और गर्म था। वहां न आदम, न आदमज़ाद। बीवी हाजरा ने रोकर कहा, 'आप मुझे और इस बच्चे को इस बयाबान में किसके सुपुर्द कर रहे हैं और कुछ कहते भी नहीं है?'

हज़रत इब्राहीम का दिल भर आया 'आपने फ़रमाया वही खुदा तुम्हारी हिफ़ाजत करेगा जो सारे जहान का निगहबान और हिफ़ाजत करने वाला है।'

हजरत हाजरा बोलीं -

'हास्बियल्लाहु व तवक्कलतु अलल्लाह'०

(अल्लाह मेरे लिए काफ़ी है, मैंने अल्लाह ही पर भरोसा किया।)

हज़रत इब्राहीम ने मुल्क शाम की राह ली और कुछ खुरमा और एक छागल पानी उन्हें दिया। मां-बेटे पर नज़र डाल कर खुदा से यह दुआ कि - **'रब्बना इन्नी अस्कन्तु मिन जुर्रियति बिवादिन ग़ैरि जी ज़र इन इन्द बैतिकल मुहर्रम...'** (हमारे रब, मैंने एक ऐसी घाटी में जो खेती के लायक़ नहीं अपनी औलाद का एक हिस्सा तेरे इज़्ज़त वाले घर के पास बना दिया है। हमारे रब, ताकि वह नमाज़ क़ायम करें, लेकिन लोगों के दिलों को उनकी तरफ़ झुका दे और उन्हें पैदावार की रोजी अता कर। शायद वे शुक्र गुज़ार हों।) जब हज़रत हाजरा का पानी और खाजा खत्म हो गया तो बहुत दिलगीर हुईं। बच्चे की प्यास उनसे देखी न जाती थी। समझा की शायद आखिरी वक़्त आ गया है। कोई खुदा के फ़ैसले से कहां तक भाग सकता है। वह पानी की तलाश में दौड़ कर सफ़ा पहाड़ पर पहुंची। इधर-उधर नज़र दौड़ाई लेकिन कहीं पानी दिखाई न दिया और कोई आदमी भी नज़र न आया जिससे वह पानी तलब करतीं। फिर वह वहां से दौड़कर मरवः पहाड़ पर आयीं और

'अल अतश! अल अतश!' (प्यास ! प्यास!)

कह कर खुदा की दरगाह में फ़रियाद की, लेकिन कहीं पानी का निशान न मिला। प्यासे बच्चे का ख़्याल आता तो वह उसके पास पहुंचती और छाती से लगातीं, फिर बच्चे को छोड़ कर सफ़ा मरवः का चक्कर लगातीं। इस तरह उन्होंने सात चक्कर लगाए।

आखिर में हज़रत हाजरा ने बच्चे को देखा कि वह जमीन पर अपनी एड़ियां मार रहे थे। खुदा ने बच्चे के क़दमों के नीचे से पानी का एक चश्मा जारी कर दिया था। जब हज़रत हाजरा ने पानी का चश्मा देखा तो बोलीं, खुदाया तेरी मेहरबानियों और नेमतों का शुक्रिया'!

हज़रत हाजरा ने चाहा कि पानी से छागल भर लें। ग़ैब से आवाज़ आई, 'यह पानी रहमते इलाहो से है। भर मत। यह कम होने का नहीं है। यह फ़ैज जारी रहेगा। खुदा ने तेरी और तेरे प्यारे की हिफ़ाजत का यह सामान किया है। यह बच्चा और इसका बाप खुदा का घर बनाएगा और तमाम दुनियां यहाँ हज और तवाफ़ के लिए आएगी। इस खुशखबरी को सुनकर वह बहुत खुश हुईं। उनकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

●●

फ़िक़्ह के चार इमाम

क़ुरआन व हदीस की बुनियाद पर शरीअत का ढांचा तैयार करने वाले फ़क़ीह कहलाते हैं। ज़िन्दगी के हर-हर मस्अले में, क़ुरआन व हदीस की रोशनी में खूब सोच-समझ कर फ़ैसले देने वाले फ़क़ीह (जमा फ़ुक़हा) को आम बोल-चाल में इमाम कहा जाता है। ऐसे मशहूर इमाम चार हैं -

1. इमाम अबू हनीफ़ा रह., 2. इमाम मालिक रह., 3. इमाम अहमद रह., 4. इमाम शाफ़ई रह.।

इन चारों इमामों के हालात इस तरह हैं।

1. इमाम अबू हनीफ़ा रह.

आप का मुबारक नाम नौमान, खानदानी नाम अबू हनीफ़ा रह., लक़ब इमामे आज़म है।

आप की पैदाइश के बारे में लोगों के अलग-अलग ख़्याल हैं। कोई सन 70 हि. बताता है, कोई सन् 61 हि. बहरहाल आप अब्दुल मलिक बिन मर्वान के खिलाफ़त के ज़माने में कूफ़ा में पैदा हुए।

सन 93 हि. में जब हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. हुज़ूर के खास खादिम अल्लाह को प्यारे हुए, उस वक़्त इमामे आज़म रह. जवान थे। आप ने लगभग 20 सहाबियों को देखा था, इस तरह आप ताबिअी थे।

इमाम साहब एक दीनदार घराने में पैदा हुए और ऐसी जगह पैदा हुए जहाँ उन्होंने आंख खोलते ही इल्म देखा और उनके कान में पहली आवाज़ इल्म की आवाज़ पड़ी।

लड़कपन का कुछ हिस्सा तिजारत में गुज़रा। होशियारी और दिमाग से अपनी तिजारत को बहुत जल्दी बढ़ा लिया, उसमें बहुत तरक़्क़ी हुई।

आप को इल्म से हमेशा लगाव रहा। चेहरे से भी इल्म टपकता था, आपको देख कर यह सोचना मुश्किल होता था कि यह नव जवान ताज़िर है। एक बार आपको उस वक़्त के उस्ताद ने देखा, तो उन्होंने भी आपके बारे में यह बताया कि यह नव-जवान कोई तालिबे-इल्म है।

एक दिन की बात है, जबकि आप बाज़ार जा रहे थे, तो रास्ते में उस जमाने के कूफ़े के मशहूर उस्ताद हज़रत इमाम शाबी रज़ि. ने आप को देखा, हुलिए से समझे, कोई तालिबे इल्म है। पास बुलाकर पूछा, कहां जा रहे हो ? आपने जवाब में कहा कि किसी व्यापारी के पास जा रहा हूं। इमाम शाबी ने फ़रमाया, नहीं, नहीं, मेरा पूछने का मतलब तो यह है कि किस से पढ़ते हैं ?

इमाम आज़म रह. ने कहा कि मैं उलेमा के पास कम जाता हूँ।

इमाम शाबी ने फ़रमाया, मियां ! इस तरफ़ से लापरवाई न करो, इल्म वालों के पास बैठना अपने लिए ज़रूरी कर लो।

इमाम शाबी ने फ़रमाया कि मुझको तुम्हारे अन्दर क़ाबिलियत की खूबियां दिखाई दे रही हैं। तुम उलेमा के साथ ज़रूर बैठा करो। वैसे तो आपके मन में भी इल्म की उमंगें पैदा हो रही थीं और इसी सोच-विचार में रहा करते थे और इमाम शाबी रह. की इस बात का आप के मन में गहरा असर पड़ा। उनसे बिछुड़ने के बाद आपने इल्म सीखने में ज़्यादा ध्यान देना शुरू कर दिया। बड़ी लगन से इस तरफ़ जुट गए।

उस वक़्त इमाम साहब कोई 17 साल के होंगे तब तक पूरी तरह से इल्म सीखने में आपका ध्यान नहीं था, बल्कि सन् 96हि. के बाद सन् 97 हि. में आपके सामने यह बात आई तो आपने इस तरफ़ पूरी तवज्जोह दिया।

आप इल्मे कलाम भी बहुत अच्छा जानते थे। हज़रत इमाम रह. के अक़ीदे और कलाम में सबसे पहली किताब 'अल-फ़िक़्हुल कबीर' लिखी, जो इस फ़न की बुनियाद है। इसके अलावा इल्मे कलाम पर आपकी और भी किताबें हैं। हज़रत इमाम साहब फ़रमाते थे कि मैं बहुत जमाने तक इस इल्म में जुटा रहा हूं और ज़्यादा दिनों तक इस क़िस्म के लोगों से मुनाज़रे किए हैं और बीस बार 'बसरा' गया हूँ और वहाँ साल-साल भर ठहबरने का मौक़ा मिला है।

न जाने किसकी दुआ से किस्मत बदल जाये। क्या पता आपके होंठ हिले मेरी तक़दीर संवर जायें।

बेवा औरतों का निकाह

मुसलमानों में हिन्दूओं के मेल जोल से बहुत सी बेहूदा रस्मों का रिवाज और चलन हो गया, उन में से एक रस्म यह भी है कि बेवा औरत से निकाह को बुरा समझते हैं और ख़ास कर अपने को शरीफ़ कहलाने वाले मुसलमान इस बला में बहुत ज़्यादा गिरफ्तार हैं। हालांकि शरअन और अक़लन जैसा पहला निकाह वैसा दूसरा। इन दोनों में फर्क समझना इन्तेहाई हिमाक़त और बेवकूफ़ी बल्कि शर्मनाक जहालत है। औरतों की ऐसी बुरी आदत है कि ख़ुद दूसरा निकाह करना या दूसरों को इसकी रग़बत दिलाना तो दरकिनार, अगर कोई अल्लाह की बन्दीअल्लाह व रसूल के हुक्म को अपने सर और आंखों पर लेकर दूसरा निकाह कर लेती है तो वह उम्र भर हक़ारत की नज़र से देखी जाती है और औरतें बात-बात पर उसको ताना देकर उसको जलील करती हैं।

याद रखों कि दूसरा निकाह करने वाली औरतों को हक़ीर व ज़लील समझना और निकाहे सानी को बुरा जानना यह बहुत बड़ा गुनाह है बल्कि इसको ऐब समझने में कुफ्र व ख़ौफ़ है। क्योंकि शरीअत के हुक्म को ऐब समझना और उसके करने वाले को ज़लील जानना कुफ्र है। कौन नहीं जानता कि हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की जितनी बीवियां थीं, हज़रत आइशा सिद्दीकी रदियल्लाहो तआला अन्हा के सिवा कोई कुंवारी न थीं। एक- दो-दो निकाह उनके पहले हों चुके थे, तो क्या नऊज़ुबिल्लाह कोई इन उम्मत की माओं को ज़लील या बुरा कह सकता है ? तौबा! नऊज़ुबिल्लाह।

बहरहाल याद रखो कि बेवा औरतों से निकाह यह रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सुन्नत है और हदीस शरीफ में है जो कोई किसी छोड़ी हुई और मुर्दा सुन्नत को ज़िन्दा और जारी करे उसे सौ शहीदों का सवाब मिलेगा। इसलिए मुसलमान मर्द और औरतों पर वाजिब है कि इस बेहूदा रस्म को दुनिया से मिटा दें और अल्लाह व रसूल की खुशनूदी के लिए बेवा औरतों का निकाह जरूर करा दें और उन बेचारी दुखियारी अल्लाह की बन्दियों को बेकसी और तबाही व बरबादी से बचा कर एक सौ शहीदों का सवाब हासिल करें। बेवा औरतों को भी लाज़िम है कि अल्लाह व रसूल के हुक्म को अपने सर और आँखों पर रखते हुए गैर किसी शर्म के खुशी खुशी दूसरा निकाह कर लें और सौ शहीदों के सवाब की हक़दार बन जायें।

अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में इरशाद फरमाया है कि (सूरह नूर) (और निकाह कर दो अपनों में उनका जो बे निकाह हों और अपने लाइक गुलामों और कनीज़ों का) और हुज़ूरे अक़रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि - (मिश्कात जि. 1 स. 30) यानी मेरी उम्मत में फ़साद फैल जाने के वक़्त जो शख़्स मजबूती के साथ मेरी सुन्नत पर अमल करे उसको एक सौ शहीदों का सवाब मिलेगा।

इस हदीस को इमाम बैहक़ी अलैहिर्रहमा ने भी 'किताबुज़्ज़ुहद' में हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत किया है।

नाअते-ए-पाक

मेहबूबे खुदा की आमद पर सुब्हान अल्ला, सुब्हान अल्ला।
कहते हैं मलायक जिन्नो बशर सुब्हान अल्ला, सुब्हान अल्ला।।
इस बारह रबी उल अव्वल पर सरकार का हर एक दिवाना।
पढ़ता है दुरूदें रह-रह कर सुब्हान अल्ला, सुब्हान अल्ला।।
वो शाफ़ए मेहशर हैं बेशक सुल्तान हैं दोनो आलम के।
हैं आमना बी के नूरे नज़र सुब्हान अल्ला, सुब्हान अल्ला।।
देखा जो शहेदीं का चेहरा तो दाई हलीमा ने ये कहा।
बे मिरल है अब्दुल्ला का पिसर सुब्हान अल्ला, सुब्हान अल्ला।
हर सम्त फ़ज़ा में रक्साँ हैं सरकारे दो आलम के जलवे।
हर सक्त है नूरानी मंज़र सुब्हान अल्ला, सुब्हान अल्ला।।
वो सखरे दीं वो साहे उमम तौसीफ़ अब उनकी क्या हो रक़म।
बरहक़ हैं वही रब के दिलबर सुब्हान अल्ला, सुब्हान अल्ला।।
वल्लाह जहाँ ते हर मोमिन पढ़ता है, जिनका कलमा नसीम।
है जश्न उन्हीं का पेशे नज़र सुब्हान अल्लाह, सुब्हान अल्ला।

नीम रिफ़अत ग्वालियरी

नात शरीफ़

बनी है सुरमए चश्मे फ़लक मिट्टी मदीने की
फ़रिश्तों के है माथे की चमक मिटटी मदीने की
अगर तू अर्शे आज़म की हक़ीक़त देखना चाहे
लगा आंखों में अपनी बे झिझक मिटटी मदीने की
कभी मिल जाएं बोसे के लिए नालैन आक़ी की
है रखती दिल में अब भी ये ललक मिटटी मदीने की
शबे असरा लिपट कर दाने नूरे मुजस्सम से
गई है मंज़िलें कौसेन तक मिटटी मदीने की
खुदाया क़ब्र की तारीकियां मुझको न छू पायें
मेरे माथे को दे ऐसी चमक मिटटी मदीने की
गुबारे ख़ाके तैबा से फ़ज़ाएं महकी महकी हैं
बिखेरे है यह कि गुल की महक मिटटी मदीने की
उसी के रंग की 'मिसबाह' रंगत है दोआलम में
है चर्ख़े दहर पर नूरी धनक मिटटी मदीने की

ख़्वाजा सैयद मिसबाहुल मुराद मदारी

मनक़बत शरीफ़

महकी हुई फ़ज़ा है दयारे मदार में
खुशबूए मुस्तफ़ा है दयारे मदार में
सैराब कर रहा है जो हर तशनाकाम को
दरया वह बह रहा है दयारे मदार में
होता गुमां है तैबा की सुबहे हसीन का
वह नूर वह ज़िया है दयारे मदार में
मुनकिर मुनाफ़क़त का जो तुझको लगा है रोग
इसकी फ़क़त दवा है दयारे मदार में
आये हैं उस्तुवारिये निसबत को औलिया
मेला सा एक लगा है दयारे मदार में
मुनकिर को भी निगाहे बसीरत नसीब हो
'शोहरत' यही दुआ है दयारे मदार में

शोहरत अदीब मकनपुरी

मनक़बत शरीफ़

एक एक शख़्स गुलेनूर मकनपूर का है
गुलसितां नूर से मामूर मकनपूर का है
आइना बनके निकलते यहां से पत्थर
यह तो हर रोज़ का दस्तूर मकनपूर का है
तरबियत ने शहे मरदाँ की किया है रोशन
इसलिए आइना मशहूर मकनपूर का है
आरज़ू क्यों मुझे बहकाने पे है आमादा
गुल तो गुल ख़ार भी मन्ज़ूर मकनपूर का है
क़रया क़रया है यहाँ का रविशे बाग़े बिहिश्त
गोशा गोशा चमने हूर मकनपूर का है
मिस्ले खुर्शीद मचकता है उफ़क़ पर अपने
जो गदा जिस जगह मामूर मकनपुर का है
शग़ले दम्माल हो या तौफ़ दरे ज़िन्दा मदार
दीने इसलाम ही दस्तूर मकनपूर का है
जाने किस औज पे है बाबे अता ऐ 'यावर'
हर तरफ़ मकनपूर मकनपूर का है

यावर वारसी, कानपुर

कभी हम ज़िन्दगी से ग़िला करके रोए कभी मौत की दुआ करके रोए।

या गौस-ए-आजम   या ख्वाजा -ए-आजम   या जिन्दाशाह मदार-ए-आजम

हदिया 12/- रुपये ख्वाजा गरीब नवाज शिफा खाना   RNI No. MPHIN/2011/39179

वर्ष : 4 अंक : 03   मासिक   मार्च 2014

- हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की पैदाईश
- मंलगाने किराम के बाल शरीअत के आईन में
- बारगाहे नुबूवत से हिजर व जुदाई का एहसास
- अंसार महाजिर भाई- भाई
- हज़रत कुतबुल मदार का रोजा
- बैअत व मुरीदी का शरई जायजा

ख्वाजा गरीब नवाज शिफाखाना

खलीफए हुजुर मुफ्तिए आज़म हिन्द
हज़रत नूरी बाबा

हाफिज शाहिद मासूमी मदारी, पनिहार
मौलाना शाकिर रज़ा नूरी